नाम किताब : **हज्ज व ज़ियारत**
(अनवारुल बशारति फ़ी मसाइलिल हज्जे वज़्ज़ियारति)

मुसन्निफ़ : इमाम अहमद रज़ा ख़ान
फ़ाज़िले बरेलवी अलैहिर्रहमा

सफ़हात : १२०

नाशिर : सुन्नी नूरी मस्जिद, दारुल उलूम रज़ाए मुस्तफ़ा

मतबअ : रज़ा आफ़सेट, मुंबई-३.

सने इशाअत : १४२९ हि. २००८ ई.

तादाद : तीन हज़ार

पेशे लफ़्ज़

हज़रत अल्लामा क़ारी मुहम्मद मुस्लेहउद्दीन साहिब सिद्दीक़ी मद ज़िल्लहु

ये रिसाल-ए-मुबारिका अलमुसम्मा ब अनवारुल बशारति फ़ी मसाइलिल हज्जे वज़्ज़ियारति, इस से पहले हिन्द व पाकिस्तान में कई बार छप चुका है। इस की मक़बूलियत का ये आलम है कि इधर छपा और उधर हाथो हाथ निकल गया और इस कि मांग में दिन-ब-दिन इज़ाफ़ा होता जा रहा है। हक़ीक़त ये है कि इस रिसाल-ए-मुबारक-ा में मसाइले हज्ज-ो ज़ियारत मुस्तनद तरीक़े पर जमअ़ किये गए हैं। और इख़्तिसार को मद्देनज़र रखा गया है। सफ़रे हज्ज-ो ज़ियारत के कई मराहिल-ो मनाज़िल होते है। इन मसाइल की तर्तीब-ो तद्वीन इस ख़ुबी से की गई है कि जिस मसअ्ला को देखना हो, उसी बाब में मिल जाता है। जो उसके लिए क़ायम किया गया है। इबारत निहायत बा वक़ार, ज़ामेअ़ और क़ुरऑन-ो हदीस-ो फ़िक़ह की इस्तिलाहत पर मुश्तमिल है। हरमैन तय्येबैन के मुसाफ़िर के लिए बेह्तरीन मुअ़ल्लिम-ो रहनुमा है। मक़ामाते मुक़द्दिसा का अदब सिखाता है और अरकाने हज्ज की अदायगी के वक़्त जो कैफ़ियत एक हाजी के दिल में होनी चाहिए उसकी निशानदही करता है। ग़रज़ ये कि ज़ाहिरी व मअ़्नवी एअ़्तबार से ये एक बेह्तरीन तोहफ़ा है। इस रिसाल-ए-मुबारका को इस सदी के मुजद्दिदे बरहक़ इमाम अह्ले

सुन्नत हज़रत शाह अहमद रज़ा खाँ फ़ाज़िले बरैलवी रदियल्लाहु तआला अन्हु ने तस्नीफ़ फ़रमाया। जिनकी जलालते इल्मी को उनके मुख़ालफ़ीन भी तस्लीम करने पर मज्बूर हुए। जिनका शोहरा आलमगीर है। आप की तस्नीफ़ क़र्दा किताबों की तअ्दाद एक हज़ार से ज़्यादा है। आप के पास अक्नाफ़े आलम से सवालात आते थे और आप अपनी मजालिस में मुतअद्दिद मुहर्रिरों को बिठाकर ब नफ़्से नफ़ीस जवाबात तह्रीर कराते थे। हिन्दुस्तान का वायसराय भी हैरान होकर ये कहा करता कि जितनी डाक हज़रत मौलाना अहमद रज़ा खाँ साहिब के पास आती है वो तो मेरे पास भी नहीं आती। बअ्ज़-बअ्ज़ सवालात पर तो रिसाले तस्नीफ़ फ़रमा दिए जो चार सौ और पाँच सौ सफ़हात पर मुश्तमिल हैं। ओलमा अंगुश्त बदन्दाँ हैं कि अअ्ला हज़रत जिस मसअ्ला पर क़लम उठाते हैं तो फिर क़लम नहीं रुकता। उलूम के दरिया बहाते हैं। ओलमा व सलफ़ की तहरीरों को बतौर सनदे इस्तिशहाद पेश करने के बाद, क़ालरज़ा, कहकर मसाइल में वो-वो मूशिगाफ़ियाँ फ़रमाते हैं कि उसकी नज़ीर नहीं मिलती। आदाबे शरीअत का पास-ो लिहाज़ बहुत ज़ियादा रखता है। अज़्मते मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के डंके बजाते हैं।

हज़रत का क़ल्ब-ो जिगर मअ़्मूर होता है। और वारफ़्तगी तारी होती है। और इसी वारफ़्तगी में ये अश्आ़र ज़बान पर आते हैं।

भीनी सुहानी सुब्ह में ठंडक जिगर की है
कलियाँ खिलीं दिलों की हवा ये किधर की है
खुबती हुई नज़र में अदा किस सहर की है
चुभती हुई जिगर में सदा किस गजर की है
हम जाँए और क़दम से लिपट कर हरम कहे
सौंपा ख़ुदा को तुझको ये अ़ज़मत सफ़र की है
हम गिर्दे कअ़्बा फिरते थे कल तक और आज वो
हम पर निसार है ये इरादत किधर की है
कालिक जबीं की सज्द-ए-दर से छुड़ाओगे
मुझ को भी ले चलो ये तमन्ना हजर की है
डूबा हुआ है शौक़ में ज़मज़म और आँख से
झाले बरस रहे हैं ये हसरत किधर की है
बरसा कि जाने वालों पे गौहर करूँ निसार
अब्रे करम से अ़र्ज़ ये मीज़ाबे ज़र की है
आग़ोशे शौक़ खोले है जिनके लिए हतीम
वो फ़िर के देखते नहीं ये धुन किधर की है

जब अअ़्ला हज़रत मदीना मुनव्वरा की तरफ़ रवाना होते हैं तो मदीना और साहिबे मदीना की अ़ज़्मतों का तसव्वुर करते हुए फ़रमाते हैं।

हाँ-हाँ रहे मदीना है ग़ाफ़िल ज़रा तू जाग
ओ पाँव रखने वाले ये जा चश्म-ो सर की है
वारूँ क़दम-क़दम पे कि हर दम है जाने नव
ये राहे जाँफ़ज़ा मेरे मौला के दर की है
अल्लाह अकबर अपने क़दम और ये ख़ाके पाक
हसरत मलाइका को जहाँ वज़ओ सर की है
मेअ्राज का समाँ है कहाँ पहुँचे ज़ाइरो
कुर्सी से उँची कुर्सी इसी पाक घर की है

फिर जव सरकारे मदीना के सब्ज़ गुवंद के क़रीब पहुँचते हैं तो यूँ नवासंज होते हैं।

महवूवे रव्वे अ़र्श है इस सब्ज़ कुब्बा में
पहलू में जलवागाह अतीक़-ो उमर की है

फिर अअ्ला हज़रत इस दरवार की अज़्मत-ो बुलंदी और मलाइका की मुसलसल वराए सलाम हाज़िरी का यूँ ज़िक्र फ़रमाते हैं।

सत्तर हज़ार सुब्ह हैं सत्तर हज़ार शाम
यूँ बन्दगी-ए-ज़ुल्फ़-ो रुख़ आठों पहर की है
जो एक बार आयें दोबारा न आएंगे
रुख़्सत ही बारगाह से बस इस क़दर की है

फिर मअ़सूम फ़रिश्तों और उम्मते मुहम्मादिया के आ़सी व गुनाहगारों की हाज़िरायों का फ़र्क़ ज़ाहिर फ़रमाते हैं कि मअ़सूम फ़रिश्तों को तो उम्र में सिर्फ़ एक मर्तबा बारगाहे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम में सलातो सलाम का नज़राना पेश करने की इजाज़त मिलती है मगर उम्मते मुहम्मदिया के गुनाहगारों व आ़सियों के बारे में फ़रमाते हैं।

मअ़सूमों को है उम्र में सिर्फ़ एक बार बार
आ़सी पड़े रहें तो सिला उम्र भर की है
ज़िन्दा रहें तो हाज़िरी बारे गहे नसीब
मर जाएँ तो हयातें अबद ऐ़श घर की है।

मदीना मुनव्वरा में मौत बड़ी मुबारक मौत है, जिस के बारे में हुज़ूर ने इर्शाद फ़रमाया :- مَنِ اسْتَطَاعَ مِنْكُمْ اَنْ يَّمُوْتَ بِالْمَدِيْنَةِ فَلْيَمُتْ بِهَا فَاِنِّيْ اَشْفَعُ لِمَنْ يَّمُوْتُ۔

तर्जमा तुम में से जिस से हो सके कि मदीना में मरे तो मदीना में ही मरना कि जो इसमें मरेगा मै उसकी

शफ़ाअ़त करुंगा।

इस मज़मून को बड़ी ख़ूबी के साथ अपने इस शेअ़र में बयान फ़रमाते हैं

तयबा में मरके ठंडे चले जाओ आख़ें बन्द
सीधी सड़क ये शह्रे शफ़ाअ़त नगर की है

ये सफ़रे हरमैन तय्येबैन के मौक़अ़ पर अअ़्ला हज़रत के क़ल्ब-ो जिगर की कैफ़ियतें जिन को अपने अश्आ़र में ज़ाहिर फ़रमाया है, लिहाजा हर नाज़िर-ो मुसाफ़िरे हरमैन को इन कैफ़ियात के हुसूल की कोशिश करनी चाहिए और यही मक़बूलियते हज्ज की निशानी है।

امّا بعد ये चन्द हुरुफ़ हिदायते हुज्जाज के लिए हैं, इन में अक्सर किताबे मुस्तताब जवाहरुल बयान शरीफ़ तस्नीफ़े लतीफ़े अक्दस हज़रत ख़ातिमुल मुहक्क़िक़ीन सय्येदुना व मौलाना मौलवी मुहम्मद नक़ी अली ख़ाँ साहिब क़ादिरी बरकाती क़ुद्दिसिर्रहुश्शरीफ़ से इल्तिक़ात (१) किए हैं। ३, शव्वाल सन् १३२९ हिजरी को वाला जनाब हज़रत सय्येद मुहम्मद अहसन साहिब बरेलवी ने फ़क़ीर अहमद रज़ा क़ादिरी ग़ुफ़रलहु से फ़रमाया कि १० शव्वाल को मेरा इरादए हज्ज है। बहुत लोग जाते हैं। हज्ज का तरीक़ा और सफ़र के आदाब लिख कर छाप दें। हज़रत सय्येद साहिब के हुक्म से ब कमाले इस्तेअ़जाल ये चन्द सुतूर तहरीर हुई। उम्मीद है कि ब-बरकते सादात किरामुल्लाहि तआ़ला क़बूल फ़रमाए और मुसलमान भाईयों को नफ़अ़ पहुँचाए। -

आमीन

---

१) और सदहा मसाइल अपने रिसाइल और मनसके मुतवस्सिता वग़ैरह से इज़ाफ़ा किए।

फ़क़ीरों पर तसद्दुक़ करता चले ये हज्जे मबरुर की निशानी है।

८) आलिम कुतुबे फ़िक़ह बक़दरे क़िफ़ायत साथ ले वरना किसी आलिम के साथ जाए। ये भी न मिले तो कम अज़ कम ये रिसाला हमराह हो।

९) आईना, सुर्मा, कंघा, मिसवाक साथ रखे कि सुन्नत है।

१०) अकेला सफ़र न करे कि मनअ् है। रफ़ीक़ दीनदार हो कि बद दीन की हमराही से अकेला बेह्तर है।

११) हदीस में है, जब तीन आदमी सफ़र में जाएँ. अपने में एक को सरदार बना लें। इस में कामों का इन्तिज़ाम रहता है। सरदार उसे बनाए जो ख़ुश ख़ल्क़ दीनदार हो। सरदार को चाहिए रफ़िक़ों के आराम को अपनी आसाइश पर मुक़द्दम रखे।

१२) चलते वक़्त सब अज़ीज़ों. दोस्तों से मिले और अपने क़ुसूर मुआफ़ कराले और अब उन पर लाज़िम है कि दिल से मुआफ़ कर दें। हदीस में है जिसके पास उसका मुसलमान भाई मअज़िरत लाए वाजिब है कि क़ुबूल

१५) लिबासे सफ़र पहनकर घर में चार रकअ़त नफ़्ल अल्हम्दु व क़ुल से पढ़कर बाहर निकले, वो रकअ़तें वापस आने तक उसके अहल-ो माल की निगहवानी करेंगी।

१६) जिधर सफ़र को जांए जुमेअ़रात, हफ़्ता या पीर का दिन हो और सुबह का वक़्त मुबारक है,और अहले जुमअ़ को, सफ़रे जुमअ़, क़ब्ले जुमअ़ अच्छा नहीं।

१७) दरवाज़ा से बाहर निकलते ही कहे :-

بِسْمِ اللّٰہِ وَبِاللّٰہِ وَتَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰہِ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰہِ اَللّٰھُمَّ اِنَّا نَعُوْذُبِكَ مِنْ اَنْ نَّزِلَّ اَوْ نُزَلَّ اَوْ نَضِلَّ اَوْ نُضَلَّ اَوْ نَظْلِمَ اَوْ نُظْلَمَ اَوْ نَجْھَلَ اَوْ يُجْھَلَ عَلَيْنَا اَحَدٌ

तर्जमा :- अल्लाह के नाम और अल्लाह की मदद से और मैं ने अल्लाह पर भरोसा किया और न गुनाहों से फिरना न ताअ़त की ताक़त मगर अल्लाह की तौफ़ीक़ से इलाही हम तेरी पनाह मांगते हैं इससे कि ख़ुद लग़्ज़िश करें या दुसरा हमें लग़्ज़िश दे या खुद बहकें या दुसरा हमें बहका दे या ज़ुल्म करें या हम पर ज़ुल्म हो या जिहल करें या हम पर कोई जिहल करे। (और दुरुद शरीफ़ की कसरत करे)

१८) सब से रुख़्सत के बाद अपनी मस्जिद से रुख़्सत होते वक़्ते कराहत न हो तो उसमें दो रक्अ़त नफ़्ल पढ़े।

१९) चलते वक़्त कहे :-

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَعُوْذُبِكَ مِنْ وَعْثَاءِ السَّفَرِ وَكَاٰبَةِ الْمُنْقَلَبِ وَسُوْءِ الْمَنْظَرِ فِى الْمَالِ وَالْاَهْلِ وَالْوَلَدِ۔

तर्जमा :- इलाही हम तेरी पनाह मांगते हैं सफ़र की मशक्क़त और वापसी की बदहाली और माल या अहल या अवलाद में कोई बुरी हालत नज़र आने से।

वापसी तक माल और अहलो इयाल महफ़ूज़ रहेंगे।

२०) उसी वक़्त तब्बत के सिवा क़ुलया से अऊ़ज़ो बिरब्बिन्नास तक पाँच सूरतें मअ़ बिस्मिल्लाह पढ़े फिर आख़िर में एक बार बिस्मिल्लाह शरीफ़ पढ़ ले। रास्ते भर आराम से रहेगा।

२१) नीज़ उसी वक़्त :-

اِنَّ الَّذِىْ فَرَضَ عَلَيْكَ الْقُرْاٰنَ لَرَآدُّكَ اِلٰى مَعَادٍ۔

तर्जमा :- बेशक वो जिसने तुझ पर क़ुरऑन फ़र्ज़ किया। ज़रूर तुझे फिरने की जगह वापस लाएगा।

एक बार पढ़ ले बिलख़ैर वापस आएगा।

२२) रेल वग़ैरह या जिस सवारी पर सवार हो बिसमिल्लाह कहे फिरअल्लाहु अकबर और अल्हम्दुलिल्लाह और सुब्हानल्लाह तीन तीन बार ला इलाहा इल्लल्लाहु एक बार फिर कहे।

سُبۡحٰنَ الَّذِیۡ سَخَّرَلَنَا هٰذَا وَمَا كُنَّا لَهٗ مُقۡرِنِيۡنَ ۙ وَاِنَّاۤ اِلٰى رَبِّنَا لَمُنۡقَلِبُوۡنَ

तर्जमा :- पाकी है उसे जिसने इसे हमारे बस में कर दिया और हमें इसकी ताक़त न थी। बेशक हम ज़रुर अपने रब की तरफ़ पलटने वाले हैं।

२३) हर बुलंदी पर चढ़ते वक़्त अल्लाहु अकबर और ढाल में उतरते वक़्त सुब्हानल्लाह कहे।

२४) जिस मंज़िल में उतरे :-

اَعُوۡذُ بِكَلِمٰتِ اللّٰهِ التَّامَّاتِ مِنۡ شَرِّ مَا خَلَقَ

तर्जमा :- मैं अल्लाह की कामिल बातों की पनाह मांगता हूँ उसकी सब मख़्लूक़ की शर से।

२५) जब वो बस्ती नज़र पड़े जिस में ठहरना या जाना चाहता है कहे :-

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسۡئَلُكَ خَيۡرَ هٰذِهِ الۡقَرۡيَةِ وَخَيۡرَ

तर्जमा :- इलाही हम तुझ से पनाह मांगते हैं, इस बस्ती

اَهْلِهَا وَخَيْرِ مَا فِيْهَا وَ
نَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ
هٰذِهِ الْقَرْيَةِ وَشَرِّ
اَهْلِهَا وَشَرِّ مَا فِيْهَا

की भलाई और इस बस्ती वालों की भलाई और इस बस्ती में जो कुछ है उस की भलाई और तेरी पनाह मांगते हैं इस बस्ती की बुराई से और इस बस्ती में जो कुछ है उसकी बुराई से।

हर बला से महफ़ूज़ रहगा।

२६) जिस शहर में जाए वहाँ के सुन्नी आ़लिमों और बा शरअ़ फ़क़ीरों के पास अदब से हाज़िर हो। मज़ारात की ज़ियारत करे। फ़ुज़ूल सैरं तमाशे में वक़्त न खोए।

२७) जिस आ़लिम की ख़िदमत में जाए वो मकान में हो तो आवाज़ न दे, बाहर आने का इन्तिज़ार करे। उस के हुज़ूर बेज़रुरत कलाम न करें। बेइजाज़त लिए मसअ्ला न पूछे। उसकी कोई बात अपनी नज़र में ख़िलाफ़े शरअ़ हो तो एअ्तराज़ न करे। और दिल में नेक गुमान रखे। मगर ये सुन्नी आ़लिम के लिए है। बदमज़हब के साए से भी भागे।

२८) ज़िक्रे ख़ुदा से दिल बहलाए कि फ़रिश्ता साथ रहेगान कि शेअ्र-ो लग़्वियात से शैतान साथ होगा। रात को ज़्यादा चले कि सफ़र जल्द तय होता है।

२९) मंज़िल में रास्ते से बच कर उतरे कि वहाँ साँप वग़ैरह मूज़ियों का गुजर होता है।

३०) रास्ते पर पेशाब वग़ैरा बाइसे लअ्नत है।

३१) मंज़िल में मुतफ़र्रिक़ होकर न उतरें। एक जगह रहें।

३२) हर सफ़र ख़ुसूसन सफ़रे हज्ज में अपने और अपने अज़ीज़ों, दोस्तों के लिए दुआ से ग़ाफ़िल न रहे कि मुसाफ़िरों की दुआ क़ुबूल होती है।

३३) जब दरिया में सवार हो कहे :-

بِسْمِ اللّٰهِ مَجْرٖىهَا
وَمُرْسٰىهَا اِنَّ رَبِّىْ
لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ وَمَا
قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖ
وَالْاَرْضُ جَمِيْعًا قَبْضَتُهٗ
يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَالسَّمٰوٰتُ
مَطْوِيّٰتٌ بِيَمِيْنِهٖ
سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا
يُشْرِكُوْنَ ۝

तर्जमा :- अल्लाह के नाम से है इस कश्ती का चलना और ठहरना, बेशक मेरा रब ज़रुर बख़्शने वाला मेहरबान है। काफ़िरों ने ख़ुदा ही की क़द्र जैसी चाहिए थी न पहचानी हालाँकि सारी ज़मीन क़यामत के बहुत हक़ीर सी चीज़ की तरह उसके क़ब्ज़े में है और सब आसमान उसकी क़ुदरत से लपेटे जांएगे वो पाक-ो बुलंद है उनके शिर्क से।

डूबने से महफ़ूज़ रहेगा। जब किसी मुश्किल में मदद की

ह़ाजत हो तीन बार कहे (ऐ अल्लाह के नेक बंदो मेरी मदद करो) ग़ैब से मदद होगी। ये हुक्म हदीस में है)

३४) या समदु يَاصَمَدُ (ऐ बेनियाज़) १३४ बार रोज़ाना पढ़े। भूक प्यास से बचेगा।

३५) अगर दुश्मन या रहज़न का डर हो सूरए लेइलाफ़ पढ़े कि चोर और शैतान से अमान रहे।

३६) सोते वक़्त आयतुलकुर्सी एक बार हमेशा पढ़े कि चोर और शैतान से अमान में रहे।

३७) अगर कोई चीज़ गुम हो जाए तो कहे :-

يَاجَامِعَ النَّاسِ لِيَوْمٍ لَّارَيْبَ فِيْهِ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيْعَادَ اِجْمَعْ بَيْنِيْ وَبَيْنَ ضَالَّتِيْ۔

तर्जमा :- ऐ यक़ीनी दिन के लिए सब लोगों के जमअ़ फ़रमाने वाले बेशक अल्लाह वअ़्दा ख़िलाफ़ नहीं करता मुझे मेरी गुमी चीज़ मिलादे।

इन्शाअल्लाह तआ़ला मिल जाएगी।

३८) किराया के ऊँट वग़ैरा पर जो कुछ बार (लादना) करना हो उसके मालिक को दिखाले और उससे ज़्यादा बिग़ैर उस की इजाज़त के न रखे।

३९) जानवर के साथ नर्मी करें, ताक़त से ज़्यादा काम न ले।

बे सबब न मारे। न कभी मुँह पर मारे। हत्तलमक़दूर उस पर न सोए कि सोते का बोझ ज़्यादा हो जाता है। किसी से बात वग़ैरा करने को कुछ देर ठहरना हो तो उतरे अगर मुमकिन हो।

४०) सुब्ह-ो शाम उतर कर कुछ देर पियादा चलने में दीनी दुन्यवी बहुत फ़ाएदे हैं।

४१) बद्दुओं और सब अ़रबों से बहुत नर्मी से पेश आए। अगर वो सख़्ती करें अदब से तहम्मुल करे। इस पर शफ़ाअ़त नसीब होने का वअ़्दा फ़रमाया है। ख़ुसूसन अहले हरमैन, ख़ुसूसन अहले मदीना, अहले अ़रब के अफ़आ़ल पर एअ़्तराज़ न करे। न दिल में कुदूरत लाए। इनमें दोनों जहान की सआ़दत है।

४२) हम्माल यअ़्नी ऊँट वालों को यहाँ के से किराए वाले न समझे। बल्कि अपना मख़्दूम जाने और खाने पीने में उन से बुख़्ल न करे कि वो ऐसों से नाराज़ होते हैं और थोड़ी बात में बहुत ख़ुश हो जाते हैं और उम्मीद से ज़्यादा काम आते हैं।

फ़स्ले दुवुम

एहराम और उसके एहकाम और दाख़िली हरमे मुहतरम व मक्का मुकर्रमा व मस्जिदिलहराम

१) हिन्दियों के लिए मीक़ात (जहाँ से एहराम बांधने का हुक्म है) कोहे यलम लम की महाज़ात है। ये जगह कामरान से निकलकर समन्दर में आती है जब जद्दा दो तीन मंज़िल रह जाता है। जहाज़ वाले इत्तिलाअ़ दे देते हैं। पहले से एहराम का सामान तय्यार कर रखें।

२) जब वो जगह क़रीब आए ख़ूब मल कर नहाएं वुज़ु करें और न नहा सकें तो सिर्फ़ वुज़ु कर लें।

३) चाहें तो मर्द सर मुंडवाले कि एहराम में बालों की हिफ़ाज़त से नजात मिलेगी। वरना कंघी करके ख़ुश्बूदार तेल डालें।

४) नाख़ुन कतरें, ख़त बनवाएं, मूए बग़ल व ज़ेरे नाफ़ दूर करें।

५) ख़ुश्बू लगाएं कि सुन्नत है।

६) मर्द सिले कपड़े उतारें, एक चादर नई या धुली ओढ़ें और ऐसा ही एक तहबन्द बाँधें, ये कपड़े सफ़ेद बेहतर हैं।

٧) जब वो जगह आजाए तो दो रक्अत ब नियते एहराम पढ़ें। पहली में फ़ातिहा के बाद कुलया अय्युहल काफ़िरुन दूसरी में कुलहुवल्लाहु।

٨) अब हज्ज तीन तरह का होता है। एक ये कि निरा हज्ज करें। इसे इफ़्राद कहते है। इसमें सलाम के बाद यूँ कहे :-

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اُرِیْدُ الْحَجَّ فَیَسِّرْهُ لِیْ وَتَقَبَّلْهُ مِنِّیْ نَوَیْتُ الْحَجَّ مُخْلِصًا لِّلّٰهِ تَعَالٰی۔

तर्जमा :- इलाही मैं हज्ज का इरादा करता हूँ तू इसे मेरे लिए आसान कर दे और मुझ से क़ुबूल फ़रमा मैने ख़ास अल्लाह तआ़ला के लिए हज्ज की नियत की।

दूसरा ये कि यहाँ से निरे उम्रे की नियत करे मक्का मुअज़्ज़मा में हज्ज का एहराम बांधे इसे तमत्तुअ कहते हैं। इस में बाद सलाम यूँ कहे। اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اُرِیْدُ الْعُمْرَةَ فَیَسِّرْهَا لِیْ وَتَقَبَّلْهَا مِنِّیْ نَوَیْتُ الْعُمْرَةَ مُخْلِصًا لِّلّٰهِ تَعَالٰی۔

तीसरा ये कि हज्ज-ो उम्रा दोनों की नियत यहीं से करे और ये सब से अफ़्ज़ल है। इसे क़िरान कहते हैं इसमें बाद सलाम यूँ कहे। اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اُرِیْدُ الْعُمْرَةَ وَالْحَجَّ فَیَسِّرْهُمَا لِیْ وَتَقَبَّلْهُمَا مِنِّیْ نَوَیْتُ الْعُمْرَةَ وَالْحَجَّ مُخْلِصًا لِّلّٰهِ تَعَالٰی۔

तीनों सुरतों में इस निय्यत के बाद लब्बैक बा आवाज़ कहे लब्बैक ये है :- لَبَّيْكَ اللّٰهُمَّ لَبَّيْكَ لَبَّيْكَ لَا شَرِيْكَ لَكَ لَبَّيْكَ اِنَّ الْحَمْدَ وَالنِّعْمَةَ لَكَ وَالْمُلْكَ لَا شَرِيْكَ لَكَ

१) ये एहराम था, इसके होते ही ये काम हराम होगए। औरतों से सोहबत, बोसा, मसास, गले लगाना, उसकी इन्दामे निहानी पर निगाह जबकि ये चारों बातें ब-शहवत हों। औरतों के सामने इसका नाम लेना फ़हश गुनाह हैं। हमेशा हराम थे और अब सख़्त हराम होगए। किसी से दुन्यवी लड़ाई झगड़ा, जंगल का शिकार, उसकी तरफ़ शिकार करने वाले को इशारा करना या किसी तरह बताना। बन्दूक़ या बारुद या उसके ज़िब्ह के लिए छुरी देना। उसके अंडे तोड़ना, पर उखेड़ना, पाँव या बाज़ू तोड़ना, उसका दूध दुहना उसका गोश्त या अंडे पकाना, भूनना, बेचना, ख़रीदना, खाना, नाख़ुन कतरना। सर से पाँव तक कहीं से कोई बाल जुदा करना, मुँह या सर को किसी कपड़े से छुपाना। बिस्तर या कपड़े[१] की बुक़ची या गठरी सर पर रखना इमामा बांधना, बुरक़अ दस्ताने पहनना, मोज़े या जुराबें वग़ैरा

जो पिन्डली और अक़दाम के जोड़ को छुपाए पहनना। सिला कपड़ा पहनना। ख़ुश्बू बालों या बदन या कपड़ों में लगाना। मलागीरी या कुसुम केसर ग़रज़ किसी ख़ुश्बू के रंगे कपड़े पहनना। जब कि अभी ख़ुश्बू दे रहे हों। ख़ालिस ख़ुश्बू मुश्क, अंबर, ज़अ्फ़रान, जावित्री, लौंग, इलायची, दार चीनी, ज़न्जबील वग़ैरे खाना। ऐसी ख़ुश्बू का आंचल में बांधना जिसमें फ़िलहाल महक हो। जैसे मुश्क, अंबर, ज़अ्फ़रान, सर या दाढ़ी ख़त्मी या किसी ख़ुश्बूदार या ऐसी चीज़ से धोना जिससे जूएं मर जाएं। वस्मा मेंहदी का ख़िज़ाब लगाना, गोंद वग़ैरा से बाल जमाना, ज़ैतून या तिल का तेल अगरचे बेख़ुश्बू हो बदन या बालों में लगाना, किसी का सर मूंडना अगरचे उसका एहराम न हो। जूँ मारना, फ़ेंकना किसी को उसके मारने का इशारा करना। कपड़ा उसके मारने को धोना या धूप में डालना। बालों में पारा वग़ैरा उसके मरने को लगाना ग़र्ज़ जूँ के हलाक पर किसी तरह बाइस होना।

पर पट्टी बांधना, ग़िलाफ़े कअ्बा मुअज़्ज़मा के अंदर इस तरह दाख़िल होना कि ग़िलाफ़ शरीफ़ सर या मुँह से लगे। नाक वग़ैरा मुँह का कोई हिस्सा कपड़े से छुपाना। कोई ऐसी चीज़ खाना पीना जिसमें ख़ुश्बू पड़ी हुई हो और न वो पकाई गयी हो न ज़ाईल हो गई हो। बे सिला कपड़ा रफ़ू किया या पेवन्द लगा हुआ पहनना। तकिया पर मुँह रख कर औंधा लेटना। महकती ख़ुश्बू हाथ से छूना जब कि हाथ में लग न जाए। वरना हराम है। बाज़ू या गले पर तअ्वीज़ बांधना अगरचे बे सिले कपड़े में लपेटकर बिला उज़्र बदन पर पट्टी बांधना, सिंगार करना, चादर ओढ़ना उसके आँचलों में गिरह दे लेना। तह्बन्द बाँध कर कमर बन्द से कसना।

११) ये बातें एहराम में जाइज़ हैं।

अंगरखा, कुर्ता, चुग़ा लपेट कर ऊपर से इस तरह डाल लेना कि [1] सर और मुँह न छुपे। इन चीज़ों या पजामा का तहबन्द बाँध लेना। हमयानी या पट्टी बांधना, मैल छुड़ाए, हमाम करना, किसी चीज़ के साए में बैठना, छतरी लगाना फ़सद बिग़ैर बाल मूँडे पछने लेना, आँख में जो बाल निकले उसे जुदा करना, सर या बदन इस तरह खुजाना कि बाल न टूटे और ज़ूँ न गिरे, एहराम

से पहले जो ख़ुश्बू लगाई है उस का लगा रहना, पालतू
जानवर, ऊँट, गाय, बकरी, मुर्ग़ी, का ज़िब्ह करना,
पकाना, खाना, उसका दूध दुहना अंडे तोड़ना, भूनना,
खाना, खाने के लिए मछली का शिकार करना, दवा के
लिए किसी दरयाई जानवर का मारना, दवा या ग़िज़ा
के लिए न हो निरी तफ़रीह मंज़ूर हो कि जिस तरह
लोगों में राइज है तो शिकारे दरया हो या जंगल ख़ुद
ही हराम है। और एहराम में सख़्त तर हराम। मुँह और
सर के सिवा किसी और जगह ज़ख़्म पर पट्टी बांधना।
सर या गाल के नीचे तकिया रखना। सर या नाक पर
अपना या दूसरे का हाथ रखना, कान कपड़े से छुपाना,
ठूड़ी से निचे दाढ़ी पर कपड़ा आना, सर पर सीनी और
बोरी उठाना, जिस खाने के पकने में मुश्क वग़ैरा पड़े
हों, अगरचे ख़ुश्बू दे या वे पकाए जिसमें कोई ख़ुश्बू
डाली और वो बू नहीं देती, उसका खाना पीना, घी या
चर्बी या कड़वा तेल या नारियल या बादाम या कद्दू का
तेल कि बसाया न हो, बालों या बदन में लगाना, ख़ुश्बू
के रंगे कपड़े पहनना, जब कि उनकी ख़ुश्बू जाती रही
हो। मगर कुसुम केसर का रंग मर्द को वैसे ही हराम
है। दीन के लिए लड़ना झगड़ना बल्कि इसे हासिल
फ़र्ज़-ो-वाजिब है। जूता पहनना जो कि पाँव के उस

जिस में फ़िलहाल महक नहीं, जैसे अगरबत्ती, लोबान, संदल या उसका आँचल में बाँधना, निकाह करना।

१२) इन मसाइल में औरत मर्द बराबर हैं। मगर औरत को चन्द बातें जाइज़ हैं। सर छुपाना, बल्कि ना-महरम के सामने और नमाज़ में फ़र्ज़ है तो सर पर बिस्तर, बक्चा उठाना, ब-दर्जए ऊला। गोन्द वग़ैरा से बाल जमाना। सर वग़ैरा पर पट्टी ख़्वाह बाज़ू या गले पर तअ़वीज़ बाँधना। अगरचे सी. कर ग़िलाफ़े कअ़बा के अंदर यूँ दाख़िल होना कि सर पर रहे। मुँह पर न आए। दस्ताने, मोज़े, सिले कपड़े पहनना, औरत इतनी आवाज़ से लब्बैक न कहे कि ना-महरम सुने, हाँ इतनी आवाज़ हर पढ़ने में हमेशा सब को ज़रुर है कि अपने कान तक आवाज़ आए।

तंबीह :- एहराम में मुँह छुपाना औरत को भी हराम है। नामहरम के आगे कोई पंखा वग़ैरह मुँह से बचा हुआ सामने रखे।

१३) जो बातें एहराम में नाज़ाइज हैं वो अगर किसी उज़्र से या भूल कर हों तो गुनाह नहीं! मगर उन पर जो जुर्माना मुक़र्रर है, हर तरह देना आएगा, अगरचे बे क़स्द हों। सह्वन या जबरन या सोते में।

१४) वक़्ते एहराम से रमी जुमरा तक जिस का ज़िक्र होने आएगा। अकसर अवक़ात लब्बैक की बेशुमार करना

मुअज़्ज़मा में जंगली कबूतर[१] ब कसरत हैं, हर मकान में रहते हैं ख़बरदार हरगिज़ उन्हें न उड़ाए, न डराए न कोई ईज़ा पहुँचाए। बअ़्ज़ इधर-उधर के लोग जो मक्के में बसे कबूतरों का अदब नहीं करते उनकी रीस न करें। मगर बुरा उन्हें भी न कहे। जब वहाँ के जानवर का अदब है तो मुसलमान इन्सान का क्या कहना।

१७) जब रब्बुल आ़लमीन जल्ल जलालुहु का शहर नज़र पड़े ठहर कर दुआ़ मांगे और दुरुदशरीफ़ की कसरत करे और अफ़ज़ल ये है कि नहा कर दाख़िल हो। और मदफ़ूनीने जन्नते मुअ़ल्ला के लिए फ़ातिहा पढ़े।

१८) जब मदआ़ में पहुँचे जहाँ से कअ़्बा मुअ़ज़्ज़म नज़र आए। अ़ल्लाह अकबर ये अ़ज़ीम क़ुबूल व अजाबत का वक़्त है। मिद्क़ दिल से अपने और तमाम अ़ज़ीज़ों, दोस्तों, मुसलमानों के लिए मग़फ़िरत और आ़फ़ियत की दुआ़ मांगे। और फ़क़ीर एक दुआ-ए-जामेअ़ अ़र्ज़ करता है। दुरुदशरीफ़ की कसरत करें और इसे कम से कम तीन बार पढ़े :-

اَللّٰھُمَّ ھٰذَا بَیْتُكَ
وَاَنَا عَبْدُكَ اَسْئَلُكَ الْعَفْوَ

तर्जमा :- इलाही ये तेरा घर है और मैं तेरा बन्दा, इलाही

(१) कहा जाता है कि ये कबूतर उस मुबारक जोड़े की नस्ल से हैं जिन्हें हुज़ूर सय्येदे आ़लम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हिजरत के वक़्त ग़ारे सौर में अंडे दिए थे अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल ने इस ख़िदमत के सिले में इन को अपने हरमे पाक में जगह बख़्शी।

وَالْعَافِيَةَ فِى الدِّيْنِ وَالدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ لِىْ وَلِوَالِدَىَّ وَ لِلْمُؤْمِنِيْنَ وَ الْمُؤْمِنٰتِ وَلِعَبْدِكَ اَحْمَدْ رِضَا بْنِ نَقِى عَلِىْ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لَهُمَا وَارْحَمْهُمَا وَانْصُرْهُ نَصْرًا عَزِيْزًا۔

मैं तुझ से पनाह मांगता हूँ गुनाहों की मुआफ़ी और दीन और दुनिया-ो आख़िरत में हर बला से महफ़ूज़ी अपने लिए और अपने माँ-बाप और सब मर्दों औरतों और तेरे हक़ीर बन्दे अहमद रज़ा बिन नक़ी अली के लिए इलाही उस की ज़बरदस्त इम्दाद फ़रमा। आमीन!

फिर दुरुदशरीफ़ पढ़े।

१९) यूँ ही ज़िक्रे ख़ुदा-व रसूल और अपने तमाम मुसलमानों के लिए दुआ-ए-फ़्लाहे दारैन करता हुआ वावुस्सलाम तक पहुँचे और उस आस्ताना पाक को वोसा देकर दाहिना पावँ पहले रख कर दाख़िल हो और कहे :-

بِسْمِ اللّٰهِ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَالسَّلَامُ عَلٰى رَسُوْلِ اللّٰهِ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ اَزْوَاجِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِىْ ذُنُوْبِىْ

तर्जमा :- अल्लाह के नाम से और सब ख़ूबियाँ ख़ुदा को और रसूलुल्लाह पर सलाम इलाही दुरुद भेज हमारे आक़ा मुहम्मद और उनकी आल पर और उनकी बीबियों पर, इलाही मेरे गुनाह बख़्श दे

وَافْتَحْ لِىْ اَبْوَابَ رَحْمَتِكَ ؕ

और मेरे लिए अपनी रहमत के दरवाज़े खोल दे।

२०) ये दुआ ख़ूब याद रखे, जब कभी मस्जिदिलहराम शरिफ़ ख़्वाह किसी मस्जिद में दाखिल हो इसी तरह जाए और यही पढ़े। और जब किसी मस्जिद से बाहर आए पहले बायाँ पाँव बाहर रखे और यही दुआ पढ़े मगर आख़िर में रहमतिका फ़ज़्लिका कहे और ये लफ़्ज़ और बढ़ा दे :-

وَسَهِّلْ لِىْ اَبْوَابَ رِزْقِكَ ؕ

तर्जमा :- और मेरे लिए अपनी रोज़ी के दरवाज़े आसान कर दे।

इसकी बरकात दीन-ो दुनिया में बेशुमार हैं। वल्हम्दुलिल्लाह!

फ़स्ले सोवुम

तवाफ़ व सई-ए-सफ़ा-व मरवा का बयान

अब मस्जिदिल हराम में दाख़िल हुआ अगर जमाअत क़ायम या नमाज़े फ़र्ज़ ख़्वाह वित्र या सुन्नते मुअक्कदा के फ़ौत होने का ख़ौफ़ न हो तो सब कामों से मुतवज्ज-ए-तवाफ़ हो कअ्बा शमअ है और परवाना देखता नहीं कि परवाना शमअ् के गिर्द कैसे क़ुर्बान होता है। यूँ ही तू भी इस शमअ् पर क़ुर्बान होने के लिए मुस्तइद होजा पहले इस मुक़ामे करीम का

नक़्शा देखे कि जो बात कही जाए ख़ूब ज़ेहन में आए।
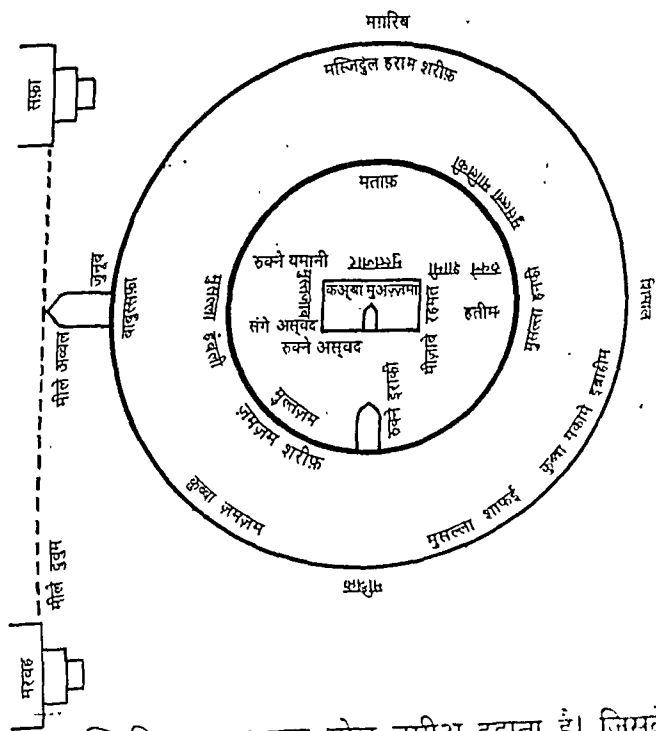
मस्जिदिल हराम एक गोल वसीअ़ इहाता है। जिसके किनारे किनारे बकसरत दालान और आने जाने के दरवाज़े हैं। और बीच में मुताफ़, मुताफ़ एक गोल दायरा है। जिसमें संगमरमर बिछा है। इसके बीच में कअ्ब-ए-मुअज़्ज़मा है। नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के ज़माने में मस्जिदिल हराम इसी क़दर थी इसकी हद पर बाबुस्सलाम शरक़ी क़दीम दरवाज़े पर वाक़ेअ़ है। रुक्ने मकान का गोशा जहाँ उसकी दो दीवारें मिलती हैं जिसे ज़ाविया कहते हैं। कअ्बा मुअज़्ज़मा के

चार रुक्न है।

रुक्ने असवद

जुनूब-ो-मश्रिक के गोशा में इसी में ज़मीन से ऊँचा संगे असवद शरीफ़ नसब है।

रुक्ने इराक़ी

मश्रिक़-ो शिमाल के गोशा में दरवाज़-ए-कअ्बा इन्हीं दोनों रुक्नों के बीच की शरक़ी दीवार में ज़मीन से बहुत बुलन्द है।

मुल्तज़म

इसी शरक़ी दीवार का वो टुकड़ा जो रुक्ने असवद से दरवाज़-ए-मुअ़ज़्ज़मा तक है।

रुक्ने शामी

शिमाल, ग़र्ब के गोशा में मीज़ाबे रहमत सोने का परनाला रुक्ने शामी व इराक़ी के बीच की शिमाली दीवार पर छत में नसब है। हतीम भी इसी शिमाली दीवार की तरफ़ है। ये ज़मीन[१] कअ्बा मुअ़ज़्ज़मा ही की थी। ज़मान-ए-जाहिलियत में जब क़ुरैश ने क़अ्बा अज़ सरे नव बनाया कमी-ए-ख़र्च के बाइस इतनी ज़मीन कअ्बा मुअ़ज़्ज़मा से

---

(१) जुनुबन शिमालन छः हाथ कअ्बा की ज़मीन है और बअ्ज़ कहते हैं सात हाथ बअ्ज़ का ख़याल है कि सारा हतीम है।

बाहर छोड़ दी इसके इर्द गिर्द एक क़ौसी अन्दाज़ की एक छोटी सी दीवार खींच दी और दोनों तरफ़ आमद-ो रफ़्त का दरवाज़ा है। और ये मुसलमानों की ख़ुशनसीबी है। इसमें दाख़िल होना कअ्बा मुअ़ज़्ज़मा ही में दाख़िल होना है। जो बेतकल्लुफ़ नसीब होता है।

रुक्ने यमानी

ग़ुरुब-ो जुनूब के गोशा में मुस्तजार रुक्ने इराक़ी व यमानी के बीच की ग़रबी दीवार का वो टुकड़ा जो मुल्तज़म के मुक़ाबिल है। मुस्तजाब रुक्ने यमानी व रुक्ने असवद के बीच में जो दीवार जुनूबी है। यहाँ सत्तर हज़ार फ़रिश्ते दुआ पर आमीन कहने के लिए मुक़र्रर हैं। फ़क़ीर ने इसका नाम मुस्तजाब रखा। मक़ामे इब्राहीम, दरवाज़-ए-कअ्वा मुअ़ज़्ज़मा के सामने एक क़ुब्बा में वो पत्थर है, जिस पर खड़े होकर सय्येदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह अ़लैहिस्सलातो वस्सलाम ने कअ्बा बनाया था। उन के क़दमे पाक का उस पर निशान[१] हो गया, जो अब तक मौजूद है। और जिसे अल्लाह तआ़ला ने **"अल्लाह की खुली निशानियाँ"** फ़रमाया। ज़मज़म शरीफ़ का क़ुब्बा उस से जुनूब को मस्जिद शरीफ़ में वाक़ेअ है।

---

(१) हमारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के क़दमे पाक के निशान में बे.क़दर बे अदब लोग कलाम करते हैं। ये मुअजज़ा-ए-इब्राहीमी हज़ारों बरस.से महफ़ूज़ है, इस से भी इनकार कर दें।

बाबुस्सफ़ा

मस्जिद शरीफ़ के दरवाजों में एक दरवाज़ा है जिस से निकल कर सामने कोहे सफ़ा है। सफ़ा कअ्बा मुअ़ज़्ज़मा से जुनूब को एक पहाड़ी थी कि ज़मीन में छुप गई है। अब वहाँ क़िब्ला रुख़ एक दालान सा बना दिया है। और चढ़ने की सीढ़ियाँ। **मरवा** दूसरी पहाड़ी सफ़ा से पूरब को थी। यहाँ भी क़िब्ला रुख़ दालान बना है, और सीढ़ियाँ सफ़ा से मरवा तक जो फ़ासिला है अब यहाँ बाज़ार है। सफ़ा से चलते हुए दाहिने हाथ को दुकानें और बाएं हाथ को इहाता मस्जिदिल हराम है।

मीलैन अख़ज़रीन इस फ़ासिले के वुस्त में दीवारे हरम शरीफ़ में दो सब्ज़ मील नसब हैं। जैसे मील के शुरु में पत्थर लगा होता है। मसआ़ वो फ़ासिला कि उन दोनों मीलों के बीच में है ये सब सूरतें रिसाले में बार-बार देखकर ख़ूब ज़ेहन नशीन कर लीजिए कि वहाँ पहुँचकर पूछने की हाजत न हो। नावाक़िफ़ आदमी अंधे की तरह काम करता है। और जो समझ लेगा वो आंखियारा है अब अपने रब अ़ज़्ज़ व जल्ल का नामे पाक लेकर तवाफ़ कीजिए।

(१) शुरु तवाफ़ से पहले मर्द इज़्तिबाअ़ करले। यानी चादर की सीधी जानिब दाहिनी बग़ल के नीचे से निकाले कि सीधा शाना खुला रहे और दोनों आँचल बाएं कंधे पर डाल ले।

(२) अब रु-ब-कअ्बा हज्रे असवद की दाहिनी तरफ़ खड़े

यमानी की जानिब संगे अक़दस के क़रीब यूँ खड़े हो कि तमाम पत्थर अपने सीधे हाथ को रहें। फिर तवाफ़ की नियत करो :- اَللّٰهُمَّ اِنِّیْٓ اُرِیْدُ طَوَافَ بَیْتِكَ الْمُحَرَّمِ فَیَسِّرْهُ لِیْ وَتَقَبَّلْهُ مِنِّیْ۔

(३) इस नियत के बाद कअ़बा को मुँह किए अपनी दाहिनी सम्त चलो। जब संगे असवद के मुक़ाबिल हो (और ये बात अदना हरकत में हासिल हो जाएगी) कानों तक हाथ इस तरह उठाओ कि हथेलियाँ हज्र की तरफ़ रहें। और कहो :- بِسْمِ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی رَسُوْلِ اللّٰهِ۔

(४) मुयस्सर हो सके तो हज्रे मुतह्हर पर दोनों हथेलियाँ और उन के बीच में मुहँ रखकर यूँ बोसा दो कि आवाज़ न पैदा हो। तीन बार ऐसा ही करो ये नसीव हो तो कमाले सआ़दत है। यक़ीनन तुम्हारे महवूव व मौला मुहम्मदु रसूलुल्लाहु सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने उसे बोसा दिया और रुए अक़दस पर रखा है। ज़हे ख़ुश नसीब कि तुम्हारे मुँह वहाँ तक पहुँचे और हुजूम के सबब न हो सके तो न औरों को ईज़ा दो और न आप दबो कुचलो वल्कि इस के इवज़ हाथ से और हाथ न पहुँचे तो लकड़ी से संगे असवद मुवारक छू कर उसे चूम लो। ये भी न वन पड़े तो हाथों से उसकी तरफ़ इशारा करके उन्हें वोसा दे लो कि मुहम्मद रसूलुल्लाह

सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के मुँह रखने की जगह पर निगाहें पड़ रही हैं यही क्या कम है।

اَللّٰهُمَّ اِيْمَانًا بِكَ وَاتِّبَاعًا لِسُنَّةِ نَبِيِّكَ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ -

(५) **तर्जमा** :- इलाही तुझ पर ईमान लाकर और तेरे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत की पैरवी को ये तवाफ़ करता हूँ।

कहते हुए सूए दरे कअ्बा की तरफ़ बढ़ो। जब हज्र मुबारक के सामने से गुज़र जाओ सीधे हो लो। ख़ानए-कअ्बा को अपने बाएं हाथ पर लेकर यूँ चलो की किसी को ईज़ा न दो।

६) मर्द रमल करता चले यानी जल्द जल्द छोटे-छोटे क़दम रखता शाने हिलाता जैसे क़वी व बहादुर लोग चलते हैं। न तो कूदता न ही दौड़ता। जहाँ ज़्यादा हुजूम हो जाए और रमल में अपनी या ग़ैर की ईज़ा हो उतनी देर रमल तर्क कर दे।

७) तवाफ़ में जिस क़दर ख़ान-ए-कअ्बा से नज़दीक हो बेह्तर है। मगर न इतने कि पुश्त-ए-दीवार पर जिस्म या कपड़ा लगे। और नज़्दीकी में कसरते हुजूम के सबब रमल न हो सके तो दूरी बेह्तर है।

८) जब मुल्तज़म, फिर रुक्ने इराक़ी, फिर मीज़ाबुर्रहमा

फिर रुक्ने शामी के सामने आओ तो ये सब दुआ के मवाक़ेअ़ हैं। इन के लिए ख़ास ख़ास दुआएं कि जो जवाहिरुल बयान शरीफ़ में मज़कूर हैं। सबका याद करना दुश्वार है। इस से वो इख़्तियार करो जो मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के सच्चे वअ़्दा से तमाम दुआओ से बेह्तर व अफ़ज़ल है यानी यहाँ और तमाम मवाक़ेअ़ अपने लिए दुआ के बदले अपने हबीब सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम पर दुरूद भेजो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम फ़रमाते हैं :- إِذًا يَكْفِي هَمَّكَ وَيُغْفَرُ لَكَ ذَنْبُكَ

ऐसा करेगा तो अल्लाह तेरे सब काम बना देगा और तेरे गुनाह मुआ़फ़ फ़रमा देगा।

९) तवाफ़ में दुआ या दुरुद के लिए कहीं रुको नहीं बल्कि चलते में पढ़ो।

१०) दुआ व दुरुद चिल्ला-चिल्ला कर न पढ़ो। जिस तरह मतूफ़ पढ़ाते हैं बल्कि आहिस्ता इस क़दर कि अपने कान तक आवाज़ आए।

११) जब रुक्ने यमानी के पास आओ तो उसे दोनों हाथ या दाहिने से तर्बरुकन छुओ न सिर्फ़ बांए से, और चाहो तो उसे बोसा भी दो और न हो सके तो यहाँ लकड़ी से

छूना या इशारा करके हाथ चूमना नहीं।

१२) जब इससे बढ़ो तो ये मुस्तजाब है। जहाँ सत्तर हज़ार फ़रिश्ते दुआ पर आमीन कहेंगे। वही दुआए जामेअ़ पढ़िए या अपने और सब अहबाब व मुस्लिमीन और इस हक़ीर-ो ज़लील की निय्यत से सिर्फ़ दुरुद शरीफ़ काफ़ी व वाफ़ी है।

१३) अब जो दुबारा हज्र तक आए ये एक फेरा हुआ यूँ ही सात फेरे करो मगर बाक़ी फेरों में वो निय्यत करना नहीं कि निय्यत तो इब्तिदा में हो चुकी। और रमल सिर्फ़ अगले तीन फेरों में है। बाक़ी चार में आहिस्ता बे जुंबिशे शाना मामूली चाल से चलो।

१४) जब सातों फेरें हो जाएं आख़िर में फिर हज्र असवद को बोसा दो या वही तरीक़े हाथ या लकड़ी को बरतो।

१५) बादे तवाफ़ मक़ामे इब्राहीम में आकर आयते करीमा وَاتَّخِذُوْا مِنْ مَّقَامِ اِبْرٰهِيْمَ مُصَلًّى۔ पढ़ कर दो रकअ़त तवाफ़ कि वाजिब हैं सूरए काफ़िरुन और क़ुलहुवल्लाहु से पढ़ो अगर वक़्ते कराहत मसलन तुलूअ़े सुब्ह से बुलंदी-ए-आफ़्ताब तक या दोपहर या नमाज़े अस्र के बाद ग़ुरुब तक न हो वरना वक़्त निकल जाने पर बाद को पढ़ो। ये रकअ़तें पढ़कर दुआ मांगो। यहाँ हदीस में एक दुआ इर्शाद हुई। जिसके

फ़ाएदों की अज़्मत उस का लिखना ही चाहती है :-

اَللّٰهُمَّ اِنَّكَ تَعْلَمُ سِرِّيْ وَعَلَانِيَتِيْ فَاقْبَلْ مَعْذِرَتِيْ وَتَعْلَمُ حَاجَتِيْ فَاَعْطِنِيْ سُؤْلِيْ وَتَعْلَمُ مَا فِيْ نَفْسِيْ فَاغْفِرْ لِيْ ذُنُوْبِيْ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ اِيْمَانًا يُّبَاشِرُ قَلْبِيْ وَيَقِيْنًا صَادِقًا حَتّٰى اَعْلَمَ اَنَّهٗ لَا يُصِيْبُنِيْ اِلَّا مَا كَتَبْتَ لِيْ وَرِضًى مِّنَ الْمَعِيْشَةِ بِمَا قَسَمْتَ لِيْ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ ط

तर्जमा :- इलाही तू मेरा छुपा और ज़ाहिर सब जानता है। तू मेरा उज़्र क़ुबूल फ़रमा और मेरी हाजत तुझे मालुम है तू मेरी मुराद दे और जो मेरे दिल में है तू जानता है तू मेरे गुनाह बख़्श दे इलाही मैं तुझ से मांगता हूँ वो ईमान जो मेरे दिल से पैवस्त हो जाए और सच्चा यक़ीन कि मैं जानूँ कि मुझे वही मिलेगा जो तूने मेरे लिए लिख दिया है। और उस मआश पर राज़ी होना जो तूने मुझे नसीब की है। ऐ सब मेहरबानों से बढ़कर मेहरबान।

हदीस में है अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल फ़रमाता है जो ये दुआ करेगा मैं उसकी ख़ता बख़्श दूँगा, ग़म दूर करूँगा, मुहताजी उस से निकाल लूँगा, हर ताजिर से बढ़कर उसकी तिजारत रखूँगा। दुनिया नाचार व मजबूर उसके पास आएगी गो वो उसे न चाहे।

१६) फिर मुल्तज़म पर जाओ और क़रीबे हज्र उस से लिपटो और अपना सीना और पेट और कभी दाहिना रुख़सारा कभी बायाँ रुख़सारा उस पर रखो। और दोनों हाथ सर से ऊँचे कर के दीवार पर फैलाओ या दाहिना हाथ दरवाज़े और बायाँ संगे असवद की तरफ़ और यहाँ की दुआ ये है :-

يَا وَاجِدُ يَا مَاجِدُ لَا تُزِلْ عَنِّي نِعْمَةً أَنْعَمْتَهَا عَلَيَّ

तर्जमा :- ऐ क़ुदरत वाले ऐ इज़्ज़त वाले मुझ से ज़ाइल न कर जो नेअ्मत तूने मुझे बख़्शी है।

हदीस में फ़रमाया, मैं जब चाहता हूँ जिबरईल को देखता हूँ कि मुल्तज़म से लिपटे हुए ये दुआ कर रहे हैं।

१७) फिर ज़मज़म पर आओ और हो सके तो ख़ुद एक डोल खींचो वरना भरने वालों से ले लो और कअ्बा को मुहँ करके तीन सासों में पेट भर के जितना पिया जाए पियो। हर बार बिस्मिल्लाह से शुरु और अल्हम्दुलिल्लाह पर ख़त्म, बाक़ी बदन पर डाल लो। और पीते वक़्त दुआ करो कि क़ुबूल है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं, ज़मज़म जिस मुराद से पिया जाए उसी के लिए है। यहाँ वही दुआए जामेअ़ पढ़ो और हाज़िरी-ए-मक्का मुअज़्ज़मा तक पीना तो बारहा नसीब होगा। क़ियामत की प्यास से बचने को पियो। कभी

अज़ाबे क़ब्र से महफ़ूज़ी को। कभी महब्बते रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम बढ़ने को। कभी वुसअ़ते रिज़्क़, कभी शिफ़ाए इमराज़, कभी हुसूले इल्म वग़ैरहा। ख़ास-ख़ास मुरादों के लिए पियो।

१८) वहाँ जब पियो, ख़ूब पेट भर कर पियो। हदीस में है, हम में और मुनाफ़िक़ों में ये फ़र्क़ है कि वो ज़मज़म पेट भर कर नहीं पीते।

१९) चाहे ज़मज़म के अन्दर भी नज़र करो कि वहुक्मे हदीस दाफ़अ़े निफ़ाक़ है।

२०) अब अगर कोई उज़्र, तकान, वग़ैरह का न हो तो अभी वरना आराम लेकर सफ़ा व मरवा में सई के लिए फिर हज्रे असवद के पास आओ और उसी तरह तकबीर वग़ैरह कहकर चूमो और न हो सके तो उसकी तरफ़ मुहँ कर के फ़ौरन बाबे सफ़ा से जानिवे सफ़ा रवाना हो। दरवाज़े से पहले वायाँ पाँव निकालो और दाहिना पैर पहले जूते में डालो। और ये अदव हर मस्जिद से बाहर आते हमेशा मल्हूज़ रखो।

२१) ज़िक्र-ो दुरुद में मशग़ूल सफ़ा की सीढ़ियों पर इतना चढ़ो कि कअ़्वा मुअज़्ज़मा नज़र आए (और ये बात यहाँ पहली ही सीढ़ी से हासिल है) फिर रुख़ ब-क[illegible] होकर दोनों हाथ दुआ की तरह पहले शानों तक उठाओ और देर तक तस्वीह व तहलील, दुरूद व [illegible]

करो कि महले इजाबत है। यहाँ भी दुआए जामेअ़ पढ़ो फिर उतर कर ज़िक्र-ो दुरुद में मशग़ूल मरवा को चलो।

२२) जब पहला मील आए मर्द दौड़ना शुरु कर दें (मगर न हद से ज़ाइद न किसी को ईज़ा देते) यहाँ तक कि दूसरे मील से निकल जाएं। इस दर्मियान में सब दुआ ब-कोशिश तमाम करो, यहाँ की दुआ ये है :-

तर्जमा :- ऐ मेरे रब बख़्श दे और रहम फ़रमा तू ही सब से ज़ियादा इज़्ज़त वाला सब से बढ़कर करम वाला।

२३) दूसरे मील से निकलकर फिर आहिस्ता हो लो यहाँ तक कि मरवा पर पहुँचो, यहाँ पहली सीढ़ी पर चढ़ने बल्कि उस के क़रीब ज़मीन पर खड़े होने से मरवा पर सुऊ़द मिल जाता है। यहाँ अगरचे इमारतें बन जाने से कअ़बा नज़र नहीं आता मगर रु-ब-कअ़बा होकर जैसा सफ़ा पर किया था, करो। ये एक फेरा हुआ

२४) फिर सफ़ा को जाओ, फिर आओ यहाँ तक कि सातवाँ फेरा मरवा पर ख़त्म हो, हर फेरे में इसी तरह करें। इसी का नाम सई है। वाज़ेह हो कि उमरा सिर्फ़ इन्हीं अफ़आ़ले तवाफ़-ो सई का नाम है। क़िरान-व तमत्तुअ

वाले के लिए भी यही उमरा हो गया। और इफ़्राद वाले के लिए ये तवाफ़, तवाफ़े क़ुदूम हुआ यानी हाज़िरी दरबार का मुजरा।

२५) क़ारिन यानी जिसने क़िरान किया है, इसके बाद तवाफ़-ो क़ुदूम की निय्यत से एक तवाफ़ व सई और बजा लाए।

२६) क़ारिन और मुफ़्रिद जिसने-जिसने इफ़्राद किया था। लब्बैक कहते हुए एहराम के साथ मक्का में ठहरें। उनकी लब्बैक दसवीं तारीख़ रमी जुमरा के वक़्त ख़त्म होगी। जभी एहराम से निकलेंगे। जिसका ज़िक्र इन्शाअल्लाह तआला आता है। मगर मुतमत्तेअ़ जिसने तमत्तोअ़ किया था। वो और मोअ़्तमर यानी निरा उमरा करने वाला शुरु तवाफ़े कअ़्बा मुअ़ज़्ज़मा से संगे असवद शरीफ़ का पहला बोसा लेते ही लब्बैक छोड़ दें और तवाफ़-ो सई-ए-मज़कुरा के बाद हल्क़ करें। यानी मर्द सारा सर मुंडवादें या तक़सीर यानी मर्द-ो औरत बाल कतरवाएं और एहराम[१] से बाहर आएं फिर मुतमत्तेअ़

(१) कभी एहराम के साथ ही मिना में क़ुर्बानी के लिए जानवर हमराह लेते हैं इसे सौक़े हुदा कहते हैं अगर किसी मुतमत्तेअ़ ने ऐसा एहराम बाँधा हो तो अब उसे भी उमरा के बाद एहराम खोलना जाइज़ न होगा बल्कि क़ारिन की तरह एहराम में रहे और लब्बैक कहा करे यहाँ तक कि दसवीं को रमी के साथ लब्बैक छोड़े। फिर क़ुर्बानी के बाद हल्क़ या तक़्सीर कर के एहराम से बाहर आए

चाहे तो आठवीं ज़िलाहिज्ज तक बे एहराम रहे। मगर अफ़ज़ल ये है कि जल्द हज्ज का एहराम बाँध ले। अगर ये ख़याल न हो कि दिन ज़ियादा हैं ये क़ैदें न निभेंगी।

तंबीहे तवाफ़े क़ुदूम में इज़्तिबाअ़ व रमल और इसके बाद सफ़ा मरवा में सई ज़रुरी नहीं। मगर अब न करेगा तो तवाफ़ुज़्ज़ियारह में कि हज्ज का तवाफ़ फ़र्ज़ है। जिसका ज़िक्र इन्शाअल्लाह आता है। सब काम करने होगें और उस वक़्त हुजूम बहुत होता है। अ़जब नहीं कि तवाफ़ में रमल और मिना में दौड़ना न हो सके और उस वक़्त हो चुका तो इस तवाफ़ में उनकी ह़ाजत न होगी। लिहाज़ा इन को मुतलिक़न दाख़िले तरकीब कर दिया।

२७) मुफ़्रिद-ो क़ारिन तो हज्ज की रमल व सई से तवाफ़े क़ुदूम में फ़ारिग़ हो लिए मगर मुतमत्तेअ़ ने जो तवाफ़-ो सई किए वो उमरा के थे। हज्ज के रमल-ो सई इस से अदा नहीं हुए। और इस पर तवाफ़े क़ुदूम है। नहीं कि क़ारिन की तरह इस में ये उमूर कर के फ़राग़त पा ले। लिहाज़ा अगर वो भी पहले से फ़ारिग़ हो लेना चाहे तो जब हज्ज का एहराम बाँधेगा। उसके बाद एक नफ़्ले तवाफ़ में रमल-ो सई कर के अब उसे तवाफ़ुज़्ज़ियारह में इन की ह़ाजत नहीं होगी।

२८) अब ये सब हुज्जाज (क़ारिन, मुतमत्तेअ़, मुफ़्रिद कोई

हो) कि मिना में जाने के लिए मक्का मुअ़ज़्ज़मा में आठवीं तारीख़ का इन्तिज़ार कर रहे हैं। अय्यामे इक़ामत में जिस क़दर हो सके निरा तवाफ़ बे इज़्तिबाअ़ व रमल-ो सई करते रहें। बाहर वालों के लिए ये सब से बेहतर इबादत है और हर सात फेरों पर मक़ामे इब्राहीम अ़लैहिस्सलातो वत्तस्लीम में दो रकअ़त पढ़ें।

२९) अब ख़्वाह मिना से वापसी पर जब कभी रात में जितनी बार कअ़बा मुअ़ज़्ज़मा पर नज़र पड़े ला इलाहा इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर तीन बार कहें और नबी सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम पर दुरुद भेजें, दुआ़ करें कि वक़्ते क़ुबूल है।

३०) **तवाफ़ अगरचे नफ्ल हो, उसमें ये बातें हराम है** :- बे वुज़ु तवाफ़ करना, कोई अ़ज़ो जो सतर में दाख़िल है। उसका चहारुम खुला होना मसलन रान या आज़ाद औ़रत का कान, बे मजबूरी सवारी पर या किसी की गोद में या कंधों पर तवाफ़ करना। बिला उज़्र बैठकर सरकना या घुटनों के बल चलना। कअ़बा को दाहिने हाथ पर लेकर उल्टा तवाफ़ करना। तवाफ़ में हतीम के अन्दर हो कर गुज़रना। सात फेरों से कम करना। ये **बातें तवाफ़ में मकरुह हैं** :- फ़ुज़ूल बात करना, बेचना, ख़रीदना, हम्द, नअ़त-ो मन्क़बत के सिवा कोई शेअ़र पढ़ना, ज़िक्र या दुआ़ या तिलावत या कोई कलाम बुलन्द आवाज़ से पढ़ना, नापाक कपड़े में तवाफ़

करना, रमल या इज़्तिबाअ़ या बोस-ए-संगे अवसद जहाँ जहाँ उनका हुक्म है तर्क करना। तवाफ़ के फेरों में ज़ियादा फ़ासिला देना। यानी कुछ फेरे कर लिए फिर देर तक ठहर गए। या और किसी काम में लग गए। फेरे बाद में किए मगर वुज़ु जाता रहा तो कर आए। या जमाअ़त क़ाएम हुई और उसने अभी नमाज़ न पढ़ी हो तो शरीक हो जाए बल्कि जनाज़ह की नमाज़ में भी तवाफ़ छोड़ कर मिल सकता है बाक़ी जहाँ से छोड़ा था आकर पूरा करे। यूँ ही पेशाब, पाख़ाने की ज़रुरत हो तो चला जाए। वुज़ु कर के बाक़ी पूरा करे। एक तवाफ़ के बाद जब तक उसकी रक्अ़तें न पढ़ ले दूसरा तवाफ़ शुरु कर देना मगर जब कि कराहते नमाज़ का वक़्त हो जैसे सुब्ह सादिक़ से तुलूअ़े आफ़्ताब या नमाज़े अ़स्र पढ़ने के बाद से ग़ुरुबे आफ़्ताब तक कि इस में मुतअ़दद्द तवाफ़ बे फ़स्ल नमाज़ जाइज़ हैं। वक़्ते कराहत निकल जाए तो हर तवाफ़ के लिए दो रक्अ़त अदा करे। ख़ुत्ब-ए-इमाम के वक़्त तवाफ़ करना, जमाअ़ते फ़र्ज़ के वक़्त तवाफ़ करना हाँ, अगर ख़ुद पहली जमाअ़त में पढ़ चुका तो बाक़ी जमाअ़तों के वक़्त तवाफ़ करने में हरज नहीं और नमाज़ियों के सामने से गुज़र सकता है कि तवाफ़ भी मिस्ले नमाज़ ही है। तवाफ़ में कुछ खाना, पेशाब, पाख़ाने या रीह के तक़ाज़े में तवाफ़ करना।

३१) **ये बातें तवाफ़-ो सई दोनों में मुबाह हैं :-** सलाम करना, जवाब देना, हाजत के लिए कलाम करना, फ़तवे पूछना, फ़तवे देना, पानी पीना हम्द व नअ़त-ो मन्क़बत के अश्आ़र आहिस्ता आहिस्ता पढ़ना, और सई में खाना खा सकता है।

३२) तवाफ़ की तरह सई भी बिला ज़रुरत सवार होकर या बैठकर नाजाईज़-व गुनाह है।

३३) **सई में ये बातें मकरुह हैं:-** बेहाजत उस के फेरों में ज़्यादा फ़स्ल देना। मगर ज़माअ़त क़ायम हो तो चला जाए। यूँ ही शिरकते जनाज़ह या क़ज़ाए हाजत या तजदीदे वुज़ू को अगरचे सई में ज़रुरी नहीं, ख़रीद-ो फ़रोख़्त, फ़ुज़ूल कलाम, सफ़ा या मरवा पर न चढ़ना, मर्द का मसआ़ में बिना उज़्र न दौड़ना, तवाफ़ के बाद बहुत ताख़ीर करके सई करना, सतरे औ़रत न होना परेशान नज़री यानी इधर उधर फ़ुज़ूल देखना, सई में भी मकरुह है और तवाफ़ में और ज़ियादा मकरुह। **मसअ़ला** बेवुज़ू भी सई में कोई हरज नहीं हाँ या वुज़ू मुस्तहब है।

३१

नज़र या ख़ुद पानी भरने की कोशिश न करें ये बातें यूँ मिल सकें कि नामहरम से बदन न छुए तो ख़ैर वरना अलग-थलग रहना, उसके लिए सबसे बेहतर है।

फ़स्ले चहारुम

मिना की रवान्गी और अरफ़ा का वुक़ूफ़ :-

१) सातवीं तारीख़ मस्जिदे हराम में बाद ज़ुहर इमाम ख़ुत्बा पढ़ेगा उसे सुनो।

२) यौमुत्तरवियह कि आठवीं तारीख़ का नाम है, जिसने एहराम न बाँधा हो बाँध ले और एक नफ़्ले तवाफ़ में रमल-ो सई करे जैसा कि ऊपर गुज़रा है।

३) जब आफ़्ताब निकल आए, मिना को चलो और हो सके तो पियादा (पैदल) कि जब तक मक्का मुअ़ज़्ज़मा पलट कर आओगे हर क़दम पर सात नेकियाँ लिखी जाएँगी। सौ हज़ार का लाख, सौ लाख का करोड़, सौ करोड़ का अरब, सौ अरब का खरब ये नेकियाँ तख़मीनन अठत्तर (७८) खरब, चालिस (४०) अरब आती हैं। और अल्लाह का फ़ज़्ल उस नबी के सद्क़े में इस उम्मत पर बेशुमार है जल्ल व अ़ला सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम।

४) रास्ते भर लब्बैक व दुआ़ और दुरुद-ो सना की कसरत करो।

५) जब मिना नज़र आए कहो :-

اَللّٰھُمَّ ھٰذِہٖ مِنًی
فَامْنُنْ عَلَیَّ بِمَا مَنَنْتَ
بِہٖ عَلٰی اَوْلِیَآئِکَ

तर्जमा :- इलाही ये मिना है तू मुझ पर वो एहसान कर जो तूने अपने दोस्तों पर किए।

६) यहाँ रात को ठहरो। आज ज़ुहर से नवीं की सुव्ह तक की पाँच नमाज़ें मस्जिदे ख़ीफ़ में पढ़ो। आज कल वअ़्ज़ मतूफ़ों ने ये निकाली है कि आठवीं को मिना में नहीं ठहरते सीधे अ़रफ़ात पहुँचते हैं, उनकी न माने और इस सुन्नते अ़ज़ीमा को हरगिज़ न छोड़े कि क़ाफ़िले के इसरार से उनको भी मजबूर होना पड़ेगा।

७) शवे अ़रफ़ा मिना में ज़िक्र-ो इवादत से जाग कर सुवह करे। सोने के वहुत दिन पड़े हैं और न हो तो कम अज़ कम इशा व सुवह तो जमाअ़ते ऊला से पढ़ो कि शव वेदारी का सवाव मिलेगा और वा वुज़ू सोओ कि रूह अ़र्श तक वुलन्द होगी।

८) सुवह मुस्तहव वक़्त में नमाज़ पढ़कर लब्बैक व ज़िक्र-ो दुरुद में मशग़ूल रहो यहाँ तक कि आफ़्ताव कोहे सवीर पर कि मस्जिदे ख़ीफ़ शरीफ़ के सामने है चमके। अव अ़रफ़ात को चलो। दिल को ख़यालें ग़ैर से पाक

करने में कोशिश करो कि आज वो दिन है कि कुछ का हज्ज क़ुबूल करेंगे और कुछ को उनके सदक़े में बख़्श देंगे। महरुम वो जो आज महरुम रहा। वसवसे आएं तो उनसे लड़ाई न बाँधों कि यूँ भी दुश्मन का मतलब हासिल है, वो तो ये चाहता है कि तुम और ख़याल में लग जाओ। लड़ाई बाँधी जब भी तो और ख़याल में पड़े बल्कि उन की तरफ़ ध्यान ही न करो। ये समझ लो कि कोई और वुजूद है। जो ऐसे ख़यालात ला रहा है। तुझे अपने रब से काम है। यूँ इन्शाअल्लाह तआला वो मरदूद-ो नाकाम वापस जाएगा।

९) रास्ते भर ज़िक्र-ो दुरुद में बसर करो। बे ज़रुरत बात मत करो। लब्बैक की बेशुमार बार बार कसरत करते चलो।

१०) जब निगाह जबले रहमत पर पड़े इन उमूर में और ज़्यादा कोशिश करो कि इन्शाअल्लाह तआला वक़्ते क़ुबूल है।

११) अ़रफ़ात में उस कोहे मुबारक के पास या जहाँ जगह मिले शारअे आम से बचकर उतरो।

१२) आज के हुजूम में लाखों आदमी हज़ारों डेरे ख़ीमे होते हैं। अपने डेरे से जाकर वापसी में इसका मिलना दुश्वार होता है इसलिए पहचान कर निशान उस पर

क़ाएम करो कि दूर से नज़र आए।

१३) मस्तूरात साथ हों तो उन के बुर्क़अ़ पर भी कोई कपड़ा ख़ास अ़लामत चमकते रेंग का लगा दो कि दूर से देख कर तमीज़ कर सको और दिल में तश्वीश न रहे।

१४) दोपहर तक ज़ियादा वक़्त अल्लाह के हुज़ूर ज़ारी और ब-इख़्लासे निय्यत हस्बे इस्तिताअ़त तसद्दुक़ और ख़ैरात व ज़िक्र-ो लब्बैक दुरुद-ो दुआ़ व इस्तिग़फ़ार व कालिम-ए-तौहीद में मशग़ूल रहो। हदीस में है नबी सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम फ़रमाते हैं, सब में वेहतर वो चीज़ जो आज के दिन मैंने और मुझ से पहले अंबिया ने कही ये है :-

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِىْ وَيُمِيْتُ ط وَهُوَ حَيٌّ لَّا يَمُوْتُ ط بِيَدِهِ الْخَيْرُ ط وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ط

तर्जमा :- अल्लाह के सिवा कोई सच्चा मअ़बूद नहीं वो एक अकेला उसका कोई साझी नहीं उसी की बादशाही है और उसी के लिए सब ख़ूबियाँ, वही जिलाए, वही मारे और वो ज़िन्दा है कि कभी न मरेगा। सब भलाइयाँ उसी के क़ब्ज़े में हैं और सब कुछ कर सकता है।

१५) दोपहर से पहले खाने पीने वग़ैरहुमा ज़रूरियात में

फ़ारिग़ होकर कि दिल किसी तरफ़ लगा न रहे। आज के दिन जैसे हाजी को रोज़ा मुनासिब नहीं कि दुआ में ज़ोअ्फ़ होगा। यूँ ही पेट भर खाना सख़्त ज़हर और ग़फ़्लत-ो कसल का बाइस है। तीन रोटी की भूक वाला एक ही खाए। नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने तो हमेशा के लिए भी हुक्म दिया है। और ख़ुद दुनिया से तशरीफ़ ले गए और जौ की रोटी कभी पेट भर न खाई। हालाँकि अल्लाह के हुक्म से तमाम जहान इख़्तियार में है और था। और अगर अनवार-ो बरकात लेना चाहो तो न सिर्फ़ आज बल्कि हरमैन शरीफ़ैन में जब तक हाज़िर रहो तिहाई पेट से ज़्यादा हरगिज़ न खाओ मानोगे तो इसका फ़ाएदा न मानोगे तो इसका नुक़्सान आँखो से देख लोगे। हफ़्ता भर इसपे अमल तो करके देखो। अगली हालत से फ़र्क़ न पाओ जभी कहना। जी बचे तो खाने पीने के बहुत से दिन हैं। यहाँ तो नूर-ो ज़ौक़ के लिए जगह ख़ाली रखो।

"भरा तन दोबारा क्या भरेगा"

१६) जब दोपहर क़रीब आए नहाओ कि सुन्नते मुअक्किदा है। और अगर न हो सके तो सिर्फ़ वुज़ू।

१७) दोपहर ढ़लते ही बल्कि इससे पहले कि इमाम के क़रीब जगह मिले मस्जिदे नमरा जाओ, सुन्नतें पढ़ कर, ख़ुत्बा सुनकर इमाम के साथ ज़ुहर पढ़ो उस के बाद बे तवक़्क़ुफ़ अ़स्र की तकबीर होगी मअ़न जमाअ़त से अ़स्र पढ़ो बल्कि बीच में सलाम-ो कलाम तो क्या मअ़नी सुन्नतें भी न पढ़ो और बादे अ़स्र भी नफ़्ल नहीं। ये ज़ुहर व अ़स्र मिलाकर पढ़ना जभी जाइज़ है कि नमाज़ या तो सुल्तान ख़ुद पढ़ाए या वो जो हज्ज में उसका नायाब होकर आता है। जिसने ज़ुहर अकेले या अपनी ख़ास जमाअ़त से पढ़ी उसे वक़्त से पहले अ़स्र पढ़ना हलाल न होगा। और जिस हिक्मत के लिए शरअ़ ने यहाँ ज़ुहर के साथ अ़स्र मिलाने का हुक्म फ़रमाया है यानी ग़ुरुबे आफ़्ताब तक दुआ के लिए वक़्त ख़ाली मिलना वो जाती रहेगी।

१८) ख़याल करो जब शरअ़ को ये वक़्त दुआ के लिए फ़ारिग़ करने का इस क़दर एहतिमाम है तो उस वक़्त और काम में मशग़ूली किस क़दर बेहूदा है। बअ़ज़ अहमक़ों को देखा है कि इमाम तो नमाज़ में है या नमाज़ पढ़कर मोक़फ़ को गया और वो खाने पीने हुक्के चाय उड़ाने में हैं। ख़बरदार ऐसा न करो। इमाम के

साथ नमाज़ पढ़ते ही फ़ौरन मोक़फ़[1] को रवाना हो जाओ। और मुमकिन हो तो ऊँट पर कि सुन्नत भी है और हुजूम में दबने कुचलने से महाफ़िज़त भी।

१९). बअ्ज़ मतूफ़ उस मजमअ में जाने से मनअ करते हैं और तरह तरह से डराते है। उनकी न सुनो कि वो खास नुज़ूले रहमते आम की जगह है। हाँ औरत और कमज़ोर मर्द यहीं खड़े हुए दुआ में शामिल हों कि बत्ने[2] अरफ़ा के सिवा ये सारा मैदान मोक़फ़ है और तसव्वुर यही करें कि हम उस मजमअ में हाज़िर हैं। अपनी डेढ़ ईंट की अलग न समझें। इस मजमअ में यक़ीनन बकसरत अवालिया, इल्यास-ो, ख़िज्र अलैहुमुस्सलात-ो वस्सलाम नबीयुल्लाह मौजूद हैं। तसव्वुर करें कि अनवारे बरकात जो उस मजमअ पर उन पर उतर रहे हैं उनके सदक़े हम भिखारियों को भी पहुँचता है। यूँ अलग होकर भी शामिल रहेंगे और जिस से हो सके तो वहाँ की हाज़िरी छोड़ने की चीज़ नहीं।

२०) अफ़्ज़ल ये है कि इमाम से नज़दीक जबले रहमत के क़रीब जहाँ स्याह पत्थर का फ़र्श है। रु-ब-क़िब्ला पसे

---

(१) वो जगह कि नमाज़ के बाद से गुरुबे आफ़्ताब तक वहाँ खड़े होकर ज़िक्र-ो दुआ का हुक्म है।

(२) बत्ने अरफ़ा अरफ़ात में हरम के नालों से एक नाला है। मस्जिदे नमरा, के मगरिब यानी मक्का मुअज़्ज़मा की तरफ़ वहाँ मोक़फ़ महज़ नाजाइज है।

पुश्ते इमाम खड़ा हो जबकि इन फ़ज़ाइल के हुसूल में दिक़्क़त या किसी की अज़ीय्यत न हो वरना जहाँ और जिस तरह हो सके वुक़ूफ़ (१) करो इमाम की दाहिनी जानिब और बायीं रु-ब-रु से अफ़्ज़ल है ये वुक़ूफ़ हज्ज की जान और इसका बड़ा रुक्न है।

२१) बअ्ज़ जाहिल ये हरकत करते हैं कि पहाड़ पर चढ़ जाते हैं और वहाँ खड़े होकर रुमाल हिलाते रहते हैं। इससे बचो और उनकी तरफ़ भी बुरा ख़्याल न करो। ये वक़्त औरों के अ़ैब देखने का नहीं अपने अ़ैबों पर शर्मसारी व गिरया वज़ारी का है।

२२) अब वो कि यहाँ हैं कि डेरों में हैं। सब हमातन सिद्क़ दिल से अपने करीम मेहरबान रब की तरफ़ मुतवज्जह होजाओ और मैदाने क़ियामत में हिसाबे अअ्माल के लिए उस के हुज़ूर हाज़िरी का तसव्वुर करो। निहायत ख़ुशूअ़ ख़ुज़ूअ़ के साथ लरज़्ते, काँपते, डरते, उम्मीद करते, आँखें बंद किए गर्दन झुकाए, दस्ते दुआ़ आसमान की तरफ़ सर से उँचे फैलाओ तक्बीर, तहलील, तस्बीह, लब्बैक, हम्द, ज़िक्र, दुआ, तौबा, इस्तिग़फ़ार में डूब जाओ कोशिश करो कि एक क़तरा आसुओं का टपके कि दलीले इजाबत-ो सआदत वरना रोने का सा मुहँ बनाओ कि अच्छों की सूरत भी अच्छी अगरचे

(१) वहाँ ज़िक्र-ो दुआ के लिए खड़े होना।

दुआ व ज़िक्र में लब्बैक की बार-बार तकरार करो। आज के दिन दुआएं बहुत मक़बूल हैं और दुआ-ए-जामेअ़ कि ऊपर गुज़री काफ़ी है। चन्द बार उसे कहलो ओर सबसे बेह्तर ये कि सारा वक़्त दुरुद-ो ज़िक्र तिलावते क़ुरऑन में गुज़ारो कि ब वअ़्द-ए-हदीस दुआ वालों से ज़्यादा पाओगे। नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का दामन पकड़ो, ग़ौसे अअ़्ज़म रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से तवस्सुल करो, अपने गुनाह और उसकी क़ह्हारी याद करके बेद की तरह लरज़ो और यक़ीन जानो कि उस की मार से उसी के पास पनाह है। उस से भाग कर कहीं नहीं जा सकते। उसके दर के सिवा कहीं ठिकाना नहीं। लिहाज़ा इन शफ़ीओं का दामन लिए उस के अ़ज़ाब से उसी की पनाह माँगो, और इसी हालात में रहो कि कभी उस के ग़ज़ब की याद से जी कापाँ जाता है। और कभी उस की रहमते आ़म की उम्मीद से मुरझाया दिल निहाल हुआ जाता है।

और यूँ ही तज़र्रुअ़ व ज़ारी में रहो यहाँ तक कि आफ़्ताब डूब जाए और रात का एक लतीफ़ जुज़ आजाए इस से पहले कूच मनअ़ है। बअ़्ज़ जल्द बाज़ी से ही चल देते हैं। उन का साथ न दो। ग़ुरुब तक ठहरने की ज़रुरत न होती तो अ़स्र ज़ुहर से मिलाकर पढ़ने का हुक्म क्यों होता,और क्या मालूम कि रहमते इलाही किस वक़्त तवज्जोह फ़रमाए अगर तुम्हारे चल

देने के बाद उतरी तो मआज़ल्लाह कैसा ख़सारा है और अगर ग़ुरुब से पहले हुदूदे अ़रफ़ात से निकल गए जब तो पूरा जुर्म है जुर्माने में क़ुर्बानी देनी आएगी। वअ़ूज़ मतूफ़ यहाँ यूँ डराते हैं कि रात में ख़तरा है ये एक दो के लिए ठीक है और जब काफ़िला का काफ़िला ठहरेगा तो इन्शाअल्लाह कुछ अन्देशा नहीं।

२३) एक अदब वाजिबुल हिफ़्ज़ इस रोज़ का ये है कि अल्लाह तअ़ला के सच्चे वअ़दों पर भरोसा करके यक़ीन करें कि आज मैं गुनाहों से ऐसा पाक साफ़ हो गया जैसा जिस दिन माँ के पेट से पैदा हुआ था। अब कोशिश करुँ कि आइन्दा गुनाह न हों और जो दाग़ अल्लाह तआ़ला ने बमहज़ रहमत मेरी पेशानी से धोया है फिर न लगे।

२४) **यहाँ ये बातें मकरुह हैं**[१] ग़ुरुबे आफ़्ताब से पहले वक़ूफ़ छोड़ कर रवान्गी जब कि ग़ुरुब तक हुदूदे अ़रफ़ात से बाहर न हो जाए। वरना हराम है। नमाज़े ज़ुहर व अ़स्र मिलाने के बाद मौक़फ़ को जाने में देर उस वक़्त से ग़ुरुब तक खाने पीने या तवज्जोह [illegible] के सिवा किसी काम में मशग़ूल होना। कोई दुन्यवी [illegible] करना, ग़ुरुब पर यक़ीन हो जाने के बाद रवान्गी में ताख़ीर, मग़रिब या इशा अ़रफ़ात में पढ़ना।

---

(१) वक़ूफ़ में नाजाइज़ और मकरुह है।

तंबीह :- मौक़फ़ में छतरी लगाने या किसी तरह साया चाहने से हत्तलमक़दूर बचो हाँ जो मजबूर है मअ़्ज़ूर है।

तंबीह

ज़रुरी, ज़रुरी, अशद ज़रुरी

बद निगाही हमेशा हराम है, न कि एहराम में, न कि मौक़फ़ या मास्जिदिलहराम में, न कि कअ़्बा के सामने, न कि तवाफ़े बैतुलहरम में, ये तुम्हारे बहुत इम्तिहान का मौक़अ़ है। औरतों को हुक्म दिया गया है कि यहाँ मुँह न छुपाओ और तुम्हें हुक्म दिया गया है कि उनकी तरफ़ निगाह न करो। यक़ीन जानो कि ये बड़े इज़्ज़त वाले बादशाह की बाँदियाँ हैं। और इस वक़्त तुम और वो सब ख़ास दरबार में हाज़िर हो, बिला तश्बीह शेर का बच्चा उसकी बग़ल में हो। उस वक़्त कौन उसकी तरफ़ निगाह उठा सकता है। तो अल्लाह वाहिद-ो क़ह्हार की कनीज़ें कि उसके ख़ास दरबार में हाज़िर हैं। उन पर बद निगाही किस क़दर सख़्त होगी। وَلِلّٰهِ الْمَثَلُ الْاَعْلٰى

हाँ हाँ होशियार ईमान बचाए हुए क़ल्ब-ो निगाह संभाले हुए हरम वो जगह है जहाँ गुनाह के इरादे पर पकड़ा जाता है। और एक गुनाह लाख के बराबर ठहरता है। अल्लाह ख़ैर की तौफ़ीक़ दे। आमीन

फ़स्ले पंजुम

मिना व मुज़्दलिफ़ा व बाक़ी अफ़आले हज्ज

१) जब ग़ुरुबे आफ़्ताब का यक़ीन हो जाए फ़ौरन मुज़्दलिफ़ा को चलो और इमाम का साथ अफ़्ज़ल है। मगर वो देर करे तो उसका इन्तिज़ार न करो।

२) रास्ते भर ज़िक्र-ो दुरुद व दुआ, लब्बैक व ज़ारी व बुका में मसरुफ़ रहो।

३) रास्ते में जहाँ गुंजाइश पाओ और अपनी या दुसरे की ईज़ा का एहतमाल न हो उतनी देर उतनी दूर तेज़ चलो। प्यादा हो ख़्वाह सवार।

४) जब मुज़्दलिफ़ा नज़र आए वशर्ते क़ुदरत प्यादा [illegible] लेना बेह्तर है। और नहाकर दाख़िल होना अफ़्ज़ल है।

५) वहाँ पहुँचकर हत्तल इमकान जब्ले क़ुज़ह के पास रास्ते से बच कर उतरो वरना जहाँ जगह मिले।

६)

लोगे ईशा के वक़्त फिर पढ़नी पड़ेगी। ग़रज़ यहाँ पहुँचकर मग़रिब वक़्ते इशा ब निय्यते अदा न ब निय्यते क़ज़ा। हत्तलइमकान इमाम के साथ उस का सलाम होते ही मअ़न इशा की जमाअ़त होगी। ईशा की फ़र्ज़ पढ़ो। उस के बाद मग़रिब और इशा की सुन्नतें और वित्र पढो और अगर इमाम के साथ नमाज़ न मिल सके तो अपनी जमाअ़त कर लो और न हो सके तो तन्हा पढ़ो।

७) बाक़ी रात ज़िक्र, लब्बैक, दुरुद-ो दुआ में गुज़ारो ये बहुत अफ़ज़ल जगह है। और बहुत अफ़ज़ल रात है। ज़िन्दगी हो तो और सोने की बहुत रातें मिलेंगी और यहाँ ये रात ख़ुदा जाने दुबारा किसे मिले और न हों सके तो ख़ैर बा तहारत सो रहो कि फ़ुज़ूल बातों से सोना बेह्तर और इतने पहले उठ बैठो कि सुबह चमकने से पहले ज़रुरियात व तहारत से फ़ारिग़ हो लो आज नमाज़े सुब्ह बहुत अँधेरे पढ़ी जाएगी, कोशिश करो कि जमाअ़ते इमाम बल्कि पहली तकबीर फ़ौत न हो कि इशा व सुब्ह जमाअ़त से पढ़ने वाला पूरी शब वेदारी का सवाब पाता है।

८) अब दरबारे अअ़्ज़म की दूसरी हाज़री का वक़्त आया । हाँ करम के दरवाज़े खोले गए हैं। कल अ़रफ़ात में हुक़ूकुल्लाह मुआ़फ़ हुए थे। यहाँ हुक़ूकुल अ़ेबाद मुआ़फ़

करने का वअ़दा है। मशअ़रिल हराम में यानी ख़ास पहाड़ी पर और न मिले तो उसके दामन में और न हो सके तो वादि-ए-मुहस्सर के सिवा जहाँ गुंजाइश पाओ वक़ूफ़ करो और तमाम बातें कि वक़ूफ़े अरफ़ात में मज़कूर हैं मल्हूज़ रखो।

९) जब तुलूअ़े आफ़्ताब में दो रक्अ़त पढ़ने का वक़्त रह जाए। इमाम के साथ मिना को चलो और यहाँ सात छोटी-छोटी कंकरियाँ दान-ए-ख़ुर्मा के बराबर पाक जगह से उठाओ तीन बार धो लो किसी पत्थर को तोड़ कर कंकरियाँ न बनाएँ।

१०) रास्ते भर बदस्तूर ज़िक्र-ो दुआ़ व दुरुद वकसरत लब्बैक में मश्ग़ूल रहो।

११) जब वादि-ए-मुहस्सर[१] पहुँचों पाँच सौ पैंतालीस हाथ बहुत जल्द तेज़ी के साथ चलकर निकल जाओ। मगर वो न तेज़ी जिससे किसी को ईज़ा हो। और इस अ़र्सा में ये दुआ़ करते जाओ :-

---

(१) ये मिना और मुज़्दलिफ़ा के बीच में एक नाला है। दोनों की [illegible] से ख़ारिज मुज़्दलिफ़ा से मिना को जाते बाएँ हाथ को जो [illegible] आता है उसकी चोटी से शुरु होकर पाँच सौ पैंतालिस [illegible] है। यहाँ पर असहाबिल फ़ील आकर ठहरे और उन पर [illegible] अबाबील उतरा था इस से जल्द गुज़रना और अज़ाबे [illegible] पनाह मांगना चाहिए।

तर्जमा :- इलाही अपने ग़ज़ब से हमें क़त्ल न कर और अपने अ़ज़ाब से हमें हिलाक न कर और इससे पहले हमें आ़फ़ियत दे।

१२) जब मिना नज़र आए वही दुआ़ पढ़ो। जो कि मक्का से आते मिना को देखकर पढ़ी थी।

१३) जब मिना पहुँचो सब कामों से पहले[१] जमरतुल अक़्बा को जाओ जो इधर से पिछला जमरा है और मक्का मुअ़ज़्ज़मा से पहले नाले के वुस्त में सवारी पर जमरा से पाँच हाथ हटे हुए यूँ खड़े हो कि मिना दाहिने हाथ पर और कअ़्बा बाएं और जमरा की तरफ़ मुँह हो सात कंकरियाँ जुदा जुदा सीधा हाथ ख़ूब उठाकर कि सफ़ेदि-ए-बग़ल ज़ाहिर हो हर एक पर बिस्मिल्लाह अल्लाहु अकबर कहकर मारो। बेह्तर ये है कि कंकरियाँ जमरा तक पहुँचें वरना तीन हाथ के फ़ासिले तक गिरें। इससे ज़ियादा फ़ासिले पर गिरी तो वो शुमार में न आएँगी। पहली कंकरी पर लब्बैक मौकूफ़ करदो।

१४). जब सात पूरी हो जाएं, वहां न ठहरो फ़ौरन ज़िक्र-ो

(१) मिना और मक्का के बीच में तीन सुतून बने हुए हैं उनको जमरा कहते हैं पहले जो मिना से क़रीब है जमर-ए-ऊला कहलाता है। और बीच का जमर-ए-वुस्ता और आख़ीर का मक्का मुअ़ज़्ज़मा से क़रीब है जमरतुल अक़बा।

दुआ करते पलट आओ।

१५) अब क़ुर्बानी में मश्ग़ूल हो। ये वो क़ुर्बानी नहीं जो ईद में होती है कि वो मुसाफ़िर पर असिला नहीं और मुक़ीम मालदार पर वाजिब है। अगरचे हज्ज में हो बल्कि ये हज्ज का शुकराना है क़ारिन व मुतमत्तेअ पर वाजिब अगरचे फ़क़ीर[१] हो। और मुफ़रद के लिए मुस्तहिब अगरचे ग़नी हो। जानवर की उम्र-ो अअ्ज़ा में वही शर्तें हैं जो ईद की क़ुर्बानी में।

१६) ज़िब्ह करना आता हो तो आप ज़िब्ह करो कि सुन्नत है। वरना वक़्ते ज़िब्ह हाज़िर रहो।

१७) रु-ब क़िब्ला लिटाकर ख़ुद भी रु-ब क़िब्ला हो और तकबीर कहते हुए निहायत तेज़ छुरी बहुत जल्द इतनी फेरो कि चारों रगें कट जाएं। ज़ियादा हाथ न बढ़ाओ कि बे सबब की तकलीफ़ हो।

१८) बेहतर ये है कि वक़्ते ज़िब्ह क़ुर्बानी वाले जानवर के

(१)

उसका ज़िब्ह करना मकरुह मगर हलाल ज़िब्ह हो जाएगा। और गले पर एक ही जगह उसे ज़िब्ह करे। जाहिलों में जो मशहूर है कि ऊँट तीन जगह से ज़िब्ह होता है। ग़लत है और ख़िलाफ़े सुन्नत भी और मुफ़्त की अज़ीय्यत मकरुह है।

२०) किसी ज़बीहा की जब तक सर्द न हो खाल न खींचो, अअ्ज़ा न काटो कि ये ईज़ा है।

२१) ये क़ुर्बानी करके अपने और तमाम मुसलमानों के हज्ज व क़ुर्बानी क़ुबूल होने की दुआ़ करो।

२२) बादे क़ुर्बानी रु-ब क़िब्ला बैठकर मर्द हल्क़ करें यानी सर मुंडाएँ कि अफ़ज़ल है। या बाल कतरवाएँ कि रुख़्सत है। औ़रतों को हल्क़ हराम है, एक पोरा बराबर बाल कतरवाएँ।

२३) हल्क़ हो या तक़्सीर दाहिनी तरफ़ से इब्तिदा करो और उस वक़्त अल्लाहु अकबर अल्लाहु अ[illegible]बर ला इलाहा इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर व लिल्लाहिल हम्द कहते जाओ। बादे फ़राग़त भी कहो। सब मुसलमानों की बख़्शिश माँगो।

२४) बाल दफ़्न करो और हमेशा बदन से जो चीज़ बाल, नाख़ुन, ख़ाल जुदा हो दफ़्न कर दिया करो।

२५) यहाँ हल्क़ या तक़्सीर से पहले नाख़ुन न कतरवाओ, न

ख़त बनवाओ।

२६) अब औ़रत से सोहबत करने, शहवत से हाथ लगाने, गले लगाने, बोसे लेने, शर्मगाह देखने के सिवा जो कुछ एहराम ने हराम किया था, सब ह़लाल हो गया।

२७) अफ़्ज़ल ये है कि आज दसवीं ही तारीख़ फ़र्ज़ तवाफ़ के लिए जिसे "तवाफ़ुज़्ज़ियारह" कहते हैं, मक्का मुअ़ज़्ज़मा जाओ बदस्तूर मज़कूर पियादा बा तहारत व सतरे औ़रत तवाफ़ करो मगर इस तवाफ़ में इज़्तिबाअ नहीं।

२८) क़ारिन, मुफ़रद, तवाफ़े क़ुदूम में और मुतमत्तेअ बाद अहरामे हज्ज किसी तवाफ़े नफ़्ल में हज्ज के रमल व सई दोनों ख़्वाह सिर्फ़ सई कर चुके हों तो इस तवाफ़ में रमल व सई कुछ न करें और अगर उस में रमल व सई कुछ न किया हो या सिर्फ़ रमल किया हो, जैसे तवाफ़ में किए थे वो उमरा का था। जैसे क़ारिन व मुतमत्तेअ का पहला तवाफ़ या वो तवाफ़ है, तहारत किया था तो इन चारों सूरतों में रमल व सई दोनों इस तवाफ़े फ़र्ज़ में करें।

२९) कमज़ोर और औ़रतें अगर भीड़ के सबब दसवीं को न जाएं तो उसके बाद ग्यारव्हीं को अफ़्ज़ल है। और उस दिन ये बड़ा नफ़अ़ है कि मुताफ़ ख़ाली मिलता है गिन्ती के बीस तीस आदमी होते हैं। औ़रतों को भी

इत्मिनान तमाम हर फेरे में संगे असवद का बोसा मिलता है।

३०) जो ग्यारव्हीं को न जाए बारहवीं को कर ले। इस के बाद बिला उज्र ताख़ीर गुनाह है। जुर्माना में एक क़ुर्बानी करनी होगी। हाँ मसलन औ़रत को हैज़ या निफ़ास आगया तो वो उनके ख़त्म होने के बाद करे।

३१) बहर हाल बादे तवाफ़ दो रक्अ़त ज़रुर पढ़ें, इस तवाफ़ से औ़रतें भी ह़लाल हो जाएंगी। ह़ज्ज पूरा होगया कि इस का दूसरा रुक्न ये तवाफ़ था।

३२) दसवीं, ग्यारव्हीं, बारव्हीं रातें मिना में ही बसर करना सुन्नत है। न मुज़्दलिफ़ा में, न मक्का में, न राह में तो जो दस या ग्यारह को तवाफ़ के लिए गया वापस आकार रात मिना में गुज़ारें।

३३) ग्यारहवीं तारीख़ बाद नमाज़े ज़ुहर इमाम का ख़ुत्बा सुन कर फिर रमी को चलो, इन अय्याम में रमी, जुमरा ऊला से शुरु करो जो मस्जिदे ख़ीफ़ से क़रीब मुज़्दलिफ़ा की तरफ़ है इस की रमी को राहे मक्का की तरफ़ से आकर चढ़ाई पर चढ़ो कि ये जगह बनिस्बते

जमरतुल अक़्बा के बुलन्द है। यहाँ रु-ब कअ्बा सात कंकरियाँ बतौर मज़कूर मारकर जुमरा से कुछ आगे बढ़ जाओ और दुआ व इस्तिग़फ़ार में कम से कम बीस आयतें पढ़ने की क़दर मश्ग़ूल हो वरना पौन पारा या सूर-ए-बक़र पढ़ने की मिक़्दार तक।

३४) फिर जमरा के वुस्ता में जाकर ऐसा ही करो।

३५) फिर जमरतुल अक़्बा पर मगर यहाँ रमी कर के न ठहरो। मअ़न पलट आओ। पलटने में दुआ करो।

३६) बऔ़निहि इस तरह बारहवीं तारीख़ तीनों जमरे बाद ज़वाल रमी करो। बअ्ज़ लोग आज दोपहर से पहले रमी करके मक्का मुअ़ज़्ज़मा को चल देते हैं, ये हमारे असल मज़हब के ख़िलाफ़ और एक ज़ईफ़ रिवायत है।

३७) बारहवीं को रमी करके ग़ुरुबे आफ़्ताब से पहले इख़्तियार है कि मक्का मुअ़ज़्ज़मा रवाना हो जाओ। मगर बाद ग़ुरुब चला जाना मअ्यूब है। अब एक दिन और ठहरना और तेरहवीं को बदस्तूर दोपहर ढले रमी करके मक्का जाना होगा और यही अफ़्ज़ल है मगर आ़म लोग बारहवीं को चले जाते हैं। तो एक रात दिन यहाँ क़ियाम में क़लील जमाअ़त को वक़्त है।

३८) हल्क़ रमी से पहले जाइज़ नहीं।

३९) ग्यारहवीं, बारहवीं की रमी दोपहर से

सही नहीं।

४०) **रमी में ये उमूर मकरुह हैं।** रमी में बड़ा पत्थर मारना तोड़कर बड़े पत्थर की कंकरियाँ मारना। जमरह के नीचे जो कंकरियाँ पड़ी हैं उठाकर मारना कि ये मरदूद कंकरियाँ हैं। जो क़ुबूल होती हैं। क़ियामत के दिन नेकियों के पल्ला में रखने को उठाई जाती हैं। वरना जमरों के गिर्द पहाड़ जमा हो जाते। नापाक कंकरियाँ मारना। सात से ज़्यादा मारना, रमी के लिए जो जिहत मज़कूर हुई उस का ख़िलाफ़ करना, जमरा से पाँच हाथ से कम फ़ासिला पर खड़ा होना ज़ियादा का मज़ाअ्क़ा नहीं। जमरों में ख़िलाफ़े तर्तीब करना, मारने के बदले कंकरी जमरे के पास डाल देना।

४१) अख़ीर दिन यानी बारहवीं ख़्वाह तेरहवीं को जब मिना से रुख़्सत होकर मक्का मुअ़ज़्ज़मा चलो तो वादिए महसब[१] में कि जन्नतुल मुअ़ल्ला के क़रीब है। सवारी से उतर लो या बे उतरे कुछ देर ठहर कर मश्ग़ूले दुआ़ हो और अफ़ज़ल तो ये है कि इशा तक नमाज़ें यहीं पढ़ो, एक नींद लेकर दाख़िले मक्का मुअ़ज़्ज़मा हो।

---

(१) जन्नतुल मुअल्ला कि मक्का का क़ब्रिस्तान है। इस के पास एक पहाड़ है और दूसरे पहाड़ के सामने मक्का को जाते हुए दाहिने हाथपर नाले के पेट से जुदा है। इन दोनों पहाड़ों के बीच का नाला वादि-ए-महसब है। जन्नतुल मुअल्ला महसब में दाख़िल नहीं।

४२) अब तेरहवीं के बाद जब तक मक्का में ठहरो अपने और अपने पीर, उस्ताद, माँ, बाप, ख़ुसूसन हुज़ूर पुरनूर सय्येदे आ़लम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम और उनके अस्हाब-ो इतरत व हुज़ूरे ग़ौसे अअ़्ज़म रदियल्लाहु तआ़ला अ़नहुम की तरफ़ से जितने हो सके उमरे करते रहो। तैग़म की मक्का मुअ़ज़्ज़मा से शिमाल यानी मदीना तय्येबा की तरफ़ तीन मील फ़ासिला पर है। जाओ, वहाँ से उमरा का एहराम जिस तरह ऊपर बयान हुआ बाँधकर आओ और तवाफ़-ो सई, हस्बे दस्तूर कर के हलक़ या तक़्सीर कर लो उमरा हो गया। जो हलक़ कर चुका और मसलन उसी दिन दूसरा उमरा किया वो सर पर उस्तरा फिरवा ले, काफ़ी है। यूँ ही वो जिस के सर पर क़ुदरती बालन न हों।

४३) मक्का मुअ़ज़्ज़मा में कम से कम एक वार ख़त्मे क़ुरऑन मजीद से महरुम न रहे।

४४) जन्नतुल मुअ़ल्ला हाज़िर होकर उम्मुल मोमिनीन ख़दीजतुल कुबरा व दीगर मदफ़ूनीन की ज़ियारत करे।

४५) मकाने विलादते अक़्दस हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की भी ज़ियारत से मुशर्रफ़ हों।

४६) हज़रत अब्दुल मुत्तलिव की क़ब्र की ज़ियारत करें और अबू तालिव की क़ब्र पर न जाओ। यूँ ही जहा में [illegible]

लोगों ने हज़रते हव्वा रदियल्लाहु तआला अन्हा का मज़ार कई सौ हाथ का बना रखा है। वहाँ भी न जाओ कि बे असल है।

४७) ओलमा की ख़िदमत से शरफ़ लो ख़ुसूसन अकाबिर जैसे आज कल हज़रत मौलाना मौलवी अब्दुल हक़ साहिब मुहाजिर इलाहबादी कि हमीदिया महल के क़रीब तशरीफ़ फ़रमा और मुसलमानाने हिन्द के लिए रहमते मुजस्सम हैं और हज़रत शैख़ुल ओलमा मौलान मुहम्मद सईद बा बसील और हज़रत शैख़ुल अइम्मा मौलाना अहमद अबुलख़ैर मर्दाद क़रीबे सफ़ा और हज़रत इमादुस्सुन्नह मौलाना शैख़ सालेह कमाल क़रीबे बाबुस्सलाम और हज़रत मौलाना सय्येद इस्माईल आफ़न्दी हाफ़िज़े कुतुबुलहरम, हरम शरीफ़ के कुतुब ख़ाने में वग़ैरहुम[१] हिफ़्ज़ुहुमुल्लाहि तआला।

४८) कअ़्बा मुअ़ज़्ज़मा की दाख़िली कमाले सआदत है। अगर जाइज़ तौर पर नसीब हो मुहर्रम में आम दाख़िली होती है। मगर सख़्त कश्मकश कमज़ोर मर्द का काम ही नहीं न औरतों को ऐसे हुजूम में जोने की इजाज़त। ज़बरदस्त मर्द अगर आप ईज़ा से बच गया तो औरों को धक्के देकर ईज़ा देगा। और ये जाईज़ नहीं न यूँ हाज़िरी में कुछ ज़ौक़ मिले और ख़ास दाख़िली बे लेन देन मुयस्सर नहीं और इस पर लेना

(१) ये सब हज़रात रूख़्सत हो चुके हैं - रदियल्लाहु अन्हुम।

भी हराम देना भी हराम के ज़रिआ एक मुस्तहब मिला भी तो वो भी हराम हो गया। इन मफ़ासिद से नजात न मिले तो हतीम शरीफ़ की हाज़िरी ग़नीमत जाने। ऊपर गुज़रा कि वो भी कअ्बा ही की ज़मीन है और अगर शायद बन पड़े यूँ कि ख़ुद्दामे कअ्बा से ठहर जाए कि दाख़िली के इवज़ में कुछ न देंगे। इस के बाद या क़ब्ल चाहे हज़ारों रुपऐ दे दो तो कमाले आदाब ज़ाहिर-ो बातिन की रिआयत से आँखें नीचे किए गर्दन झुकाए गुनाहों पर शरमाते जलाले रब्बुलबैत से लरज़ते काँपते बिस्मिल्लाह कहकर पहले सीधा पाँव बढ़ाकर दाख़िल हो। और सामने की दीवार तक इतना बढ़ो कि तीन हाथ का फ़ासला रहे। वहाँ दो रक्अत नफ़्ल ग़ैर वक़्ते मकरुह में पढ़ो कि नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का मुसल्ला है। फिर दीवार पर रुख़्सार और मुँह रख कर हम्द-ो दुरुद-ो दुआ में कोशिश करो। यूँ ही निगाहें नीचे किए चारें गोशों पर जाओ और दुआ करो और सुतूनों से चिम्टो और फिर इस दौलत का मिलना और हज्ज-ो ज़ियारत का क़ुबूल मांगो और यूँ ही आँखें नीचे किए वापस आओ, ऊपर या इधर उधर हरगिज़ न देखो और बड़े फ़ज़्ल की उम्मीद करो कि वो फ़रमाता है। जो इस घर में दाख़िल हो वो अमान में है। वल्हम्दुलिल्लाह!

ख़ुद्दाम देते हैं। हरगिज़ न लो बल्कि अपने पास से बत्ती वहाँ रौशन करके बाक़ी उठालो।

५०) जब अज़्मे रुख़्सत हो तवाफ़े वदाअ़ बे रमल-ो सई व इज़्तिबाअ़ बजा लाओ कि बाहर वालों पर वाजिब है। हाँ वक़्ते रुख़्सत औरत हैज़-ो निफ़ास में हो उस पर नहीं। फिर दो रकअ़त मक़ामे इब्राहीम में पढ़ो।

५१) फिर ज़मज़म पर आकर उसी तरह पानी पियो, बदन पर डालो।

५२) फिर दरवाज़-ए-कअ़्बा के सामने खड़े होकर आस्तान-ए-पाक को बोसा दो, और क़ुबूल व बार-बार हाज़िरी की दुआ मांगो और वही दुआ-ए-जामेअ़ पढ़ो।

५३) फिर मुल्तज़िम पर आकर ग़िलाफ़े कअ़्बा थाम कर उसी तरह चिमटो। ज़िक्र-ो दुरुद की और दुआ की कसरत करो।

५४) फिर हज्रे पाक को बोसा दो और जो आँसू रखते हो गिराओ।

५५) फिर उल्टे पाँव रुख़-ब-कअ़्बा या सीधे हाथ चलने में बार-बार फिरकर कअ़्बा को हसरत से देखते, उसकी जुदाई पर रोते या रोने का मुँह बनाते मस्जिदे करीम के दरवाज़े से बायाँ पाँव पहले बढ़ाकर निकलो और दुआ-ए-मज़कूरा पढ़ो और इसके लिए बेहतर बाबिल

ख़रुरह है।

५६) हैज़-ो निफ़ास वाली दरवाज़-ए-मस्जिद पर खड़े होकर कअ्बा को ब-निगाहे हसरत देखे और दुआ करती पलटे।

५७) फिर ब-क़दरे कुदरत फ़ुक़रा-ए-मक्का मुअज़्ज़मा पर तसद्दुक़ करके मुतवज्जह सरकारे अअ्ज़म मदीना तय्येबा हो व बिल्लाहित्तौफ़ीक़।

:-फ़स्ले शशुम:-

जुर्म और उनके कफ्फारे

इनकी तफ़्सील मोजिबे ततवील और रिसाला मुख़्तसर और वक़्त क़लील और जो तरीक़े बतादिए उन पर अमल करना इन्शाअल्लाह तआला जुर्माना से बचने का कफ़ील, लिहाज़ा यहाँ सिर्फ़ इजमालन महदूद मसाइल का बयान होता

मस्अला :- जहाँ दम का हुक्म है। वो जुर्म अगर बीमारी या सख़्त गर्मी या शदीद सर्दी या ज़ख़्म या फ़ोड़े या जुओं की सख़्त ईज़ा के बाइस होगा तो उसे जुर्मे ग़ैर इख़्तियारी कहते हैं। इसमें इख़्तियार होगा कि दम के बदले छः मिस्कीनों को एक-एक सदक़ा देदे या तीन रोज़े रख ले और अगर इस में सदक़ा का हुक्म है और ब-मजबूरी किया तो इख़्तियार होगा कि सदक़े के बदले एक रोज़ा रख ले। अब एहकाम सुनिए।

१) सिला कपड़ा या ख़ुश्बू का रंगा चार पहर[१] कामिल या लगातार ज़ियादा दिनों पहना तो दम वाजिब है। और चार पहर से कम अगरचे एक लहज़ा[२] तो सदक़ा।

२) अगर दिन को पहना और रात को गर्मी के बाइस उतार डाला या रात को सर्दी के सबब पहना दिन को उतार दिया और बाज़ आने की निय्यत से उतारा। दूसरे दिन फिर पहना तो दूसरा जुर्माना होगा। इसी तरह जितनी बार करे।

३) बीमारी के सबब पहना तो जब तक वो बीमारी रहेगी एक जुर्म है। और अगर बीमारी यक़ीनन जाती रही। उसके बाद न उतारा तो ये दूसरा इख़्तियारी जुर्म होगा। और अगर वो बीमारी यक़ीनन जाती रही दूसरी

(१) चार पहर से मुराद एक दिन या रात की मिक़दार है मसलन तुलूअ से ग़ुरुब या ग़ुरुब से तुलूअ या दोपहर से आधी रात या आधी रात से दोपहर तक।

(२) यानी लम्हा भर पहना और फिर उतार डाला जब भी सदक़ा है।

मस्अला :- संगे असवद पर ख़ुश्बू मली जाती है। वो अगर बोसा लेने में ब-हालते एहराम मुँह को बहुत सी लग गई तो दम देना होगा। और थोड़ी सी, सदक़ा।

७) सर पर पतली मेंहदी का ख़िज़ाब किया कि बाल न छुपाए। तो एक दम है। अगर गाढ़ी थोपी[1] और चार पहर गुज़रे तो मर्द पर दो दम[2] हैं और चार पहर से कम तो एक सदक़ा[3] और एक दम और औरत पर बहर हाल एक दम[4] ।

८) एक जलसे में कितने ही बदन पर ख़ुश्बू लगाए एक जुर्म और मुख़्तलिफ़ जलसों में हर बार नया जुर्म।

९) थोड़ी[5] सी ख़ुश्बू बदन के मुतफ़र्रिक़ हिस्सों पर लगाई अगर जमअ करने से एक बड़े उज़्व कामिल की मिक़्दार होजाए तो दम वरना सदक़ा।

१०) ख़ुश्बू दार सुर्मा तीन या ज़्यादा बार लगाया तो दम

---

(१) मस्अला यूँ ही पूरी हथेली या तलवे में मेंहदी लगाए तो दम है। औरत हो या मर्द और चारों में एक ही जलसे में लगाई तो एक ही वरना हर जलसे पर एक दम और हाथ या पाँव के किसी हिस्सा पर लगाई तो सदक़ा।

(२) एक सारे उज़्व पर ख़ुश्बू का दूसरा चार पहर सर छुपाने का।

(३) ख़ुश्बू पर दम और चार पहर से कम छुपाने पर सदक़ा।

(४) सिर्फ़ ख़ुश्बू का दम है इसलिए कि सर छुपाना तो उसे रवा है।

(५) قيدت به لان الطيب الكثير لا يتقيد بكمال العضو فتنبه - ١٢ منه

वरना सदक़ा।

११) अगर ख़ालिस[१] ख़ुश्बू की चीज़ इतनी खाई कि अक्सर मुँह में लग गई दम है वरना सदक़ा।

१२) खाने में ख़ुश्बू अगर पकते में पड़ी या फ़ना होगई। जब तो कुछ नहीं वरना अगर ख़ुश्बू के अज्ज़ा ज़्यादा हों तो वो ख़ालिस ख़ुश्बू के हुक्म में है। और अगर खाने का हिस्सा ज़्यादा है तो आ़म किताबों में मुतलक़ हुक्म दिया कि इस में कफ़्फ़ारा कुछ नहीं, हाँ ख़ुश्बू आती हो तो कराहत है।

१३) पीने की चीज़ में ख़ुश्बू मिलाई। अगर ख़ुश्बू का हिस्सा ग़ालिब है या तीन बार या ज़्यादा पिया तो दम है वरना सदक़ा।

मस्अ़ला :- ख़मीरा तंबाकू को न पीना बेहतर मगर मनअ़ या कफ़्फ़ारा नहीं [२].

१४) अगर चहारुम सर, या दाढ़ी के बाल, या ज़ियादा किसी तरह दूर किए तो दम है और कम में सदक़ा

१५) अगर चंदुला है या डाढ़ी बहुत हलकी छिदरी तो ये देखें कि इतने बाल उस जगह की चहारुम मिक़्दार तक पहुँचते हैं या नहीं।

---

(१) قوله لوبين ففيه الدم كما قال كثيرون لأنه ان يلتزق باكثر فمه ص
(२) حققناه فيما على ردالمحتار عقلناه ١٢ منه

١٢ منه — حققناه كما بيناه على هامشه

१६) यूँ ही चन्द जगह से दूर किए तो मिलाकर चहारुम की मिक़्दार देखेंगे।

१७) अगर सारे बदन के बाल एक जलसे में दूर किए तो एक ही जुर्म है और मुख़्तलिफ़ जलसे तो हर बार नया जुर्म।

१८) मूछें अगरचे पूरी हों सिर्फ़ सदक़ा है।

१९) गर्दन या एक बग़ल पूरी हो तो दम है। और कम में अगरचे निस्फ़ या ज़ाइद हो सदक़ा। यूँ ही मूए ज़ेरे नाफ़ चहारुम को सब के बराबर ठहराना सिर्फ़ सर और दाढ़ी में है।

२०) दोनों बग़लें पूरी मुंडाए जब भी एक ही दम है।

२१) सर दाढ़ी और बग़ल और ज़ेरे नाफ़ के सिवा बाक़ी अअ्ज़ा के मुंडाने में सिर्फ़ सदक़ा है।

२२) मूंडना, कतरना, मोचना से लेना, नूरह लगाना सब का एक हुक्म है।

२३) औरत अगर सारे या चहारुम सर के बाल एक पोरा बराबर कतरे तो दम है और कम में सदक़ा।

२४) वुज़ू करने या खुजाने या कंघी करने में जो बाल गिरे उस पर भी पूरा सदक़ा है। और बअ्ज़ ने कहा दो तीन बाल तक हर बाल के लिए एक मुट्ठी अनाज या एक

टुकड़ा रोटी या एक छुहारा।

२५) बाल आप गिर जाए तो बे उसके हाथ लगाए या बीमारी से तमाम बाल गिर पड़ें तो कुछ नहीं।

२६) एक हाथ एक पाँव के पाँचों नाख़ुन कतरे या बीसों एक साथ तो एक दम है। और अगर किसी हाथ पाँव के पूरे पाँच न कतरे तो हर नाख़ुन पर एक सदक़ा। यहाँ तक कि अगर चारों हाथ पाँव के चार-चार कतरे तो सोलह सदक़ा दे। मगर ये कि सदक़ों की क़ीमत एक दम के बराबर हो जाए तो कुछ कम करले।

२७) अगर एक जलसे में एक हाथ या पाँव के कतरे दूसरे में दूसरे के तो दो दम दे यूँ ही चार जलसे में चारों के तो चार दम[१] दे।

२८) कोई नाख़ुन टूट गया कि अब उगने के क़ाबिल न रहा, उसका बक़िया उसने काट लिया तो कुछ नहीं।

२९) शहवत के साथ बोस-ो कनार व मसास में दम (१) है। अगरचे इन्ज़ाल न हो और बिला शहवत में कुछ नहीं।

(१) **मस्अला** :- मर्द के इन अफ़आल से औरत को लज़्ज़त आए तो वो भी दम दे।

३०) अन्दामे निहानी पर निगाह करने से कुछ नहीं, [illegible]

(१) यहाँ भी जलसा का एअ्तबार चाहिए एक जलसा में [illegible] कई टूटें तो एक सदक़ा और मुतअद्दिद जलसा में तो [illegible]

इन्ज़ाल हो जाए, मकरुह ज़रुर है।

३१) जलक़ से इन्ज़ाल हो जाए तो दम है, वरना मकरुह है।

३२) तवाफ़े फ़र्ज़े कुल या अक्सर जनाबत या हैज़-ो निफ़ास में किया तो बुदना है और बे वुज़ू तो दम है और पहली सूरत में तहारत के साथ इस का इआ़दा वाजिब दूसरी में मुस्तहब।

३३) निस्फ़ से कम फ़ेरे बे तहारत किए तो हर फ़ेरे के बदले एक सदक़ा।

३४) तवाफ़े फ़र्ज़े कुल या अक्सर बिला उज्र अपने पाँव चल कर न किया बल्कि सवारी या गोद में बैठे-बैठे।

३५) या बे सतरे औ़रत किया। मसलन औ़रत की चहारुम कलाई या चहारुम सर के बाल खुले थे।

३६) या कअ्बा को दाहिने हाथ पर ले के उल्टा किया।

३७) या इसमें हतीम के अन्दर से होकर गुज़रा।

३८) या बारहवीं के बाद किया तो इन पाँचों सूरतों में दम दे।

३९) इस के चार से कम फेरे बिल्कुल न किए तो दम दे और बारहवीं के बाद किए तो हर फेरे पर सदक़ा दे।

४०) तवाफ़े फ़र्ज़ के सिवा और कोई तवाफ़ नापाकी में किया

तो दम और बे वुज़ू तो सदक़ा।

४१) फ़र्ज़ वग़ैरह कोई तवाफ़ हो जिसे नाक़िस तौर पर किया कि कफ़्फ़ारा लाज़िम हुआ, जब कामिल इआदा कर लिया कफ़्फ़ारा उतर गया। मगर बारहवीं के होने से जो नुक्सान तवाफ़े फ़र्ज़ के सिवा किसी फेरे में आया। इसका इआदा नामुमकिन, बारहवीं तो गुज़र गई।

४२) नजिस कपड़ों से तवाफ़ मकरूह है, कफ़्फ़ारा नहीं।

४३) सई के चार फेरे या ज़्यादा बिला उज़्र असला न किए। या सवारी पर किए तो दम दे और हज्ज हो गया और चार से कम में हर फेरे पर सदक़ा दे।

४४) तवाफ़ से पहले सई करली। फेरे न करेगा तो दम लाज़िम।

४५) दसवीं की सुबह बिला उज़्र मुज़्दलिफ़ा में वुक़ूफ़ न किया तो दम दे। हाँ कमज़ोर या औरत बवजहे ज़हमत तर्क करे तो जुर्माना नहीं।

४६) हल्क़, हरम में न किया, हुदूदे हरम से बाहर किया या बारहवीं के बाद किया तो दम दे।

४७) रमी से पहले हल्क़ कर लिया तो दम दे।

४८) क़ारिन या मुतमत्तेअ रमी से पहले कुर्बानी न

क़ुर्बानी से पहले हल्क़ करें तो दम दें।

४९) अगर रमी किसी दिन असला न की।

५०) या किसी एक दिन की बिल्कुल या अक्सर तर्क कर दी। मसलन दसवीं को तीन कंकरियों तक मारें या ग्यारहवीं को दस कंकरियों तक।

५१) या किसी एक दिन की बिल्कुल या अक्सर उसके बाद दूसरे दिन की तो इन तीनों सूरतों में दम दे। और अगर किसी दिन की रमी उस के बाद आने वाली रात में कर ली तो कफ़्फ़ारा नहीं।

५२) अगर किसी दिन के निस्फ़ से कम रमी मसलन दसवीं की तीन कंकरिया और दिन की दस बिल्कुल छोड़ दीं। या दूसरे दिन कीं तो हर कंकरियों पर एक सदक़ा दे। इन सदक़ों की क़ीमत दम के बराबर हो जाए तो कुछ कम करले।

५३) एहराम वाले ने किसी दूसरे के बाल मूँडे या नाख़ुन कतरे अगर वो भी एहराम में है तो ये सदक़ा दे और वो सदक़ा या दम उसी तफ़्सील पर कि उपर गुज़री और अगर वो एहराम में नहीं तो कुछ ख़ैरात कर दे। अगरचे एक मुट्ठी और वो कुछ नहीं।

५४) और अगर उसको सिले कपड़े पहनाए या ख़ुश्बू इस तरह लगाई कि अपने न लगी तो उस पर कफ़्फ़ारा

कुछ नहीं। हाँ गुनाह होगा। अगर वो भी एहराम में था और वो हस्बे तफ़्सील मज़कूर दम या सदक़ा देगा।

५५) वुक़ूफ़े अ़रफ़ा से पहले जिमाअ़ किया तो हज्ज न हुआ उसे हज्ज ही की तरह पूरा करके दम दे। और फिर फ़ौरन ही साले आइन्दा उस की क़ज़ा करले। औरत भी एहरामे हज्ज में थी तो उस पर भी यही लाज़िम है और मुनासिब है कि हज्ज के एहराम से ख़त्म तक दोनों इस तरह जुदा रहें कि एक दूसरे को न देखें। अगर ख़ौफ़ हो कि फिर इस बला में पड़ जाएंगे और वुक़ूफ़ के बाद सोहबत करने से हज्ज तो न जाएगा मगर हल्क़ो तवाफ़ से पहले किया तो बुदना दे और दोनों के बीच में किया तो दम और बेह्तर अब[1] भी बुदना है और दोनों के बाद कुछ नहीं।

५६) उमरे में तवाफ़ के चार फेरे से पहले जिमाअ़ किया तो उमरा जाता रहा दम दे। और उमरा फिर करे और चार के बाद तो दम दे उमरा सही है।

५७) अपनी जूँ अपने बदन या कपड़ों में मारी या फेंक दी तो एक में रोटी का टुकड़ा दे और दो हों तो मुट्ठी भर अनाज और ज़्यादा में सदक़ा दे।

५८) जूएँ मारने को सर या कपड़ा धोया। धूप में डाला। जब भी यही कफ़्फ़ारे जो ख़ुद क़त्ल में थे।

(१) ذكرته خروجاً عن خلاف قوى ١٢ منه

५९) यूँही दूसरे नें उस के कहने या इशारा करने से उस की जूँ को मारा जब भी उस पर कफ़्फ़ारा है। अगरचे वो दूसरा एहराम में न हो।

६०) ज़मीन वग़ैरा पर गिरी हुई जूँ या दूसरे के बदन या कपड़ों की मारने में उस पर कुछ नहीं अगरचे वो दूसरा भी एहराम में हो।

मस्अला :- जहाँ एक दम या सद्क़ा है क़ारिन पर दो हैं।

मस्अला :- कफ़्फ़ारा की क़ुर्बानी या क़ारिन व मुतमत्तेअ़ के शुकराना की ग़ैर हरम में नहीं हो सकती मगर शुकराना की क़ुर्बानी से आप खाए, ग़नी को खिलाए, और कफ़्फ़ारा की सिर्फ़ मुहताजों का हक़ है।

नसीहत :- कफ़्फ़ारे इस लिए हैं कि भूल चूक से या सोने में या मजबूरी में जुर्म हों तो कफ़्फ़ारा से पाक हो जाएं न इस लिए कि जान बूझकर बिला उज़्र जुर्म करो और कहो कि कफ़्फ़ारा दे देंगे। देना तो जब भी आएगा मगर क़सदन हुक्मे इलाही की मुख़ालफ़त सख़्त है। वल इयाज़े बिल्लाहि तआ़ला हक्क़ सुब्हानुहू तौफ़ीक़े ताअ़त अ़ता फ़रमा कर मदीना तय्येबा की ज़ियारत कराए। आमीन

फ़स्ले हफ्तुम

हाज़िरी-ए-सरकारे अअ्ज़म मदीना तय्येबा हुज़ूर हवीवे अक्रम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम

१) ज़ियारते अक्दस क़रीब ब-वाजिब है। बहुत लोग दोस्त बनकर तरह तरह डराते हैं। राह में ख़तरा है, वहाँ बीमारी है, ख़बर दार किसी की न सुनो और हरगिज महरुमी का दाग़ लेकर न पलटो, जान एक दिन जानी ज़रुर है। इससे क्या बेहतर कि उनकी राह में जाए। और तजरबा है कि जो उन का दामन थाम लेता है। उसे अपने साए में ब -आराम ले जाते हैं। कील का खटका नहीं रहता है। वल्हम्दु लिल्लाह

२) हाज़िरी में ख़ालिस ज़ियारते अक्दस की निय्यत करो। यहाँ तक कि इमाम इब्नुल हुमाम फ़रमाते हैं। इस वार मस्जिदे शरीफ़ की नीय्यत भी शरीक न करे।

३) रास्ते भर दुरुद-ो ज़िक्र शरीफ़ में डूब जाओ।

४) जब हरमे मदीना शरीफ़ नज़र आए वेहतर ये कि पियादा हो लो। रोते, सर झुकाए, आँखें नीचे किए और हो सके तो नंगे पाँव चलो वल्कि "जा-ए-सरस्त ई कि तू पा मी निही, पाए न वीनी कि कुजा मी निही"

हरम की ज़मीं और क़दम रख के चलना
अरे सर का मौक़अ है ओ जाने [illegible]

५) जब क़ुब्ब-ए-अनवर पर निगाह पड़े दुरुद-ो सलाम की कसरत करो।

६) जब शहरे अक़दस तक पहुँचो जलाल-ो जमाले महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के तसव्वुर में ग़र्क़ हो जाओ।

७) हाज़िरी-ए-मसजिद से पहले तमाम ज़रूरियात जिन का लगाव दिल बटने का बाइस हो निहायत जल्द फ़ारिग़ हो। इन के सिवा किसी बेकार बात में मश्ग़ूल न हो। मअ़न वुज़ू व मिसवाक करो और ग़ुस्ल करके बेह्तर सफ़ेद व पाकीज़ा कपड़े पहनो और नए बेह्तर। सुर्मा और ख़ुश्बू लगाओ और मुश्क अफ़्ज़ल।

८) अब फ़ौरन आस्तान-ए-अक्दस की तरफ़ निहायत ख़ुशूअ व ख़ुज़ूअ से मुतवज्जह हो, रोना न आए तो रोने का मुँह बनाओ और दिल को ब-ज़ोर रोने पर लाओ। और अपनी संगदिली से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की तरफ़ इल्तिजा करो।

९) जब दरे मस्जिद पर हाज़िर हो सलात-ो सलाम अ़र्ज़ करके थोड़ा ठहरो, जैसे सरकार से हाज़िरी की इजाज़त मांगते हो। बिस्मिल्लाह कहकर सीधा पाँव पहले रख कर हमा तन अदब होकर दाख़िल हो।

१०) उस वक़्त जो अदब-ो तअ़ज़ीम फ़र्ज़ है, हर मुसलमान

का दिल जानता है। आँख, कान, ज़बान, हाथ, पाँव दिल सब ख़याले ग़ैर से पाक करो। मस्जिदे अक़्दस के नक़्श-ो निगार न देखो।

११) अगर कोई ऐसा सामने आए, जिस से सलाम, कलाम ज़रुर हो तो जहाँ तक बने कतराओ, वर्ना ज़रुरत से ज़्यादा न बढ़ो, फिर भी दिल सरकार ही की तरफ़ हो।

१२) हरगिज हरगिज मस्जिदे अक़्दस में कोई हरफ़ चिल्ला कर न निकले।

१३) यक़ीन जानो कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम, सच्ची, हक़ीक़ी, दुन्यावी, जिस्मानी, हयात से वैसे ही ज़िन्दा हैं जैसे वफ़ात शरीफ़ से पहले थे। उनकी और तमाम अंबिया अ़लैहिमुस्सलात वसल्लम की मौत सिर्फ़ वअ़्द-ए-ख़ुदा की तस्दीक़ को एक आन के लिए थी। उन का इन्तिक़ाल सिर्फ़ नज़रे अ़वाम से छुप जाना है।

इमाम मुहम्मद इब्ने हाज मक्की[१] और इमाम अहमद क़िस्तलानी मवाहिबे लदुन्निया में और अइम्मा दीन रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैहिम अज्मईन फ़रमाते हैं :

(१) देखिए मदख़िल जिल्द अव्वल मतबऐ मिस्र पृ. २१५

لَا فَرْقَ بَيْنَ مَوْتِهٖ وَحَيَاتِهٖ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِىْ مُشَاهَدَتِهٖ لِاُمَّتِهٖ وَمَعْرِفَتِهٖ بِاَحْوَالِهِمْ وَنِيَّاتِهِمْ وَعَزَائِمِهِمْ وَخَوَاطِرِهِمْ وَذَالِكَ عِنْدَهٗ جَلِيٌّ لَا خَفَاءَ بِهٖ

तर्जमा :- हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की हयात-ो वफ़ात में इस बात में कुछ फ़र्क़ नहीं कि वो अपनी उम्मत को देख रहे हैं और उनकी निय्यतों उनके इरादों के दिलों के ख़यालों को पहचानते हैं और ये सब हुज़ूर पर ऐसा रौशन है जिसमें असलन पोशीदगी नहीं।

इमाम रहमतुल्लाह तलमीज़ इमाम मुहक़्क़िक़ इब्नुलहुमाम मनसक[१] मुतवस्सित और अ़ली क़ारी मक्की इसकी शरह मस्लके[२] मुन्क़सित में फ़रमाते हैं :-

اِنَّهٗ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَالِمٌ بِحُضُوْرِكَ وَقِيَامِكَ وَسَلَامِكَ اَىْ بِجَمِيْعِ اَحْوَالِكَ وَاَفْعَالِكَ وَارْتِحَالِكَ وَمَقَامِكَ ط

तर्जमा :- बेशक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम तेरी हाज़िरी और तेरे खड़े होने और तेरे तमाम अफ़आ़ल-ो अह्वाल व कूच-ो मक़ाम से आगाह हैं।

---

(१) देखो शरहे मवाहिब अ़ल्लामा ज़रक़ानी मतबअ़े मिस्री जिल्द ८ पृ३४८.

(२) देखो शरहे लबाब मतबअ़े मेरी मिस्र.

१४) अब अगर जमाअत क़ाएम हो शरीक हो जाओ कि इस में तहय्येतुलमस्जिद भी अदा हो जाएगी वरना अगर ग़लब-ए-शौक़ मुहलत दे और उस वक़्त कराहत न हो तो दो रक्अ्त तहय्येतुल मस्जिद व शुकरान-ए-हाज़िरी-ए-दरबारे अक्दस सिर्फ, "कुल या" और "कुल" से बहुत हलकी मगर रिआयते सुन्नत के साथ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नमाज़ पढ़ने की जगह जहाँ अब वुस्ते मस्जिदे करीम में मेहराव वनी है। और वहाँ न मिले तो जहाँ तक हो सके उस के नज़्दीक अदा करो। फिर सज्दए शुक्र में गिरो और दुआ करो कि इलाही अपने हबीब सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का अदब और उनका और अपना कुवूल नसीव कर। आमीन।

१६) अब कमाले-अदब-ो व हैबत-ो ख़ौफ़ व उम्मीद के साथ ज़ेरे क़िन्दील उस चाँदी की कील के सामने जो हुजर-ए-मुतह्हरा की जुनूबी दीवार में चेहरे-ए-अनवर के मुक़ाबिल लगी है। कम अज़ कम चार हाथ के फ़ासिले से क़िब्ला को पीठ और मज़ारे अनवर को मुँह करके नमाज़ की तरह हाथ बाँधकर खड़े हो। लबाब-ो शरह, लबाब-ो इख़्तियार, शरहे मुख़्तार फ़ताव-ए-आलमगीरी वग़ैरहा मोअ्तमद किताबों में इस अदब की तसरीह फ़रमाई कि :— يَقِفُ كَمَا يَقِفُ فِى الصَّلٰوةِ हुज़ूर के सामने ऐसा खड़ा हो जैसा नमाज़ में होता है। ये इबारत आलमगीरी व इख़्तियार की है। और लबाब में फ़रमाया :—

وَاضِعًا يَمِيْنَهٗ عَلٰى شِمَالِهٖ दस्त बस्ता दाहिना हाथ बाईं पर रख कर खड़ा हो।

१७) ख़बरदार जाली शरीफ़ को बोसा देने या हाथ लगाने से बचो कि ख़िलाफ़े अदब है। बल्कि चार हाथ फ़ासिले से ज़ियादा क़रीब न जाओ। ये उनकी रहमत क्या कम है कि तुमको अपने हुज़ूर बुलाया। अपने मवाजहे अक़्दस में जगह बख़्शी। उन की निगाहे करीम अगरचे हर जगह तुम्हारी तरफ़ थी अब ख़ुसूसियत और इस दर्जा कुर्ब के साथ है।

१८) अल्हम्दु लिल्लाह अब कि दिल की तरह तुम्हारा मुँह भी

उस पाक जाली की तरफ़ हो गया। जो अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल के महबूबे अ़ज़ीमुश्शान सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि वसल्लम की आरामगाह है। निहायत अदबो वक़ार के साथ, ब-आवाज़े हज़ीं व सूरते दर्दे आगीं व दिले शर्मनाक व जिगर चाक-चाक मोअ्तदिल आवाज़ से न बुलन्दो सख़्त (की उन के हुज़ूर आवाज़ बुलन्द करने से अ़मल अकारत हो जाते हैं) न निहायत नर्मो पस्त (कि सुन्नत के ख़िलाफ़ है अगरचे वो तुम्हारे दिलों के ख़तरों तक से आगाह हैं जैसा कि अभी तसरीहाते अइम्मा से गुज़रा)

मुजरा व तस्लीम बजा लाओ और अ़र्ज़ करो :-
اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهٗ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَارَسُوْلَ اللهِ ط اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا خَيْرَ خَلْقِ اللهِ ط اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا شَفِيْعَ الْمُذْنِبِيْنَ ط اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحَابِكَ وَاُمَّتِكَ اَجْمَعِيْنَ ط

१९) जहाँ तक मुमकीन हो और ज़वान यारी दे और मलालत ो कसल न हो सलातो सलाम की कसरत करो। हुज़ूर से अपने और अपने माँ वाप, पीर, उस्ताद, औलाद, अ़ज़ीज़ों, दोस्तों और सव मुसलमानों के लिए शफ़ाअत माँगो वार-वार अ़र्ज़ करो :- اَسْئَلُكَ الشَّفَاعَةَ يَا رَسُوْلَ اللهِ ط

२०) फिर अगर किसी ने अर्ज़े सलाम की वसीय्यत की बजा लाओ। शरअ़न इसका हुक्म है। और ये फ़क़ीर ज़लील उन मुसलमानों को जो इस रिसाला को देखें वसीय्यत करता है कि जब उन्हें ह़ाज़िरी-ए-बारगाह नसीब हो फ़क़ीर की ज़िन्दगी में या बाद कम अ़ज कम तीन बार मवाजहे अक्दस में ज़रुर ये अल्फ़ाज़ अ़र्ज करके इस ना लाइक़, नंगे ख़लाइक़ पर एह़सान फ़रमाएं। अल्लाह उन को दोनों जहान में जज़ा बख़्शे। आमीन.

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہِ وَعَلٰی اٰلِکَ وَذَوِیْکَ فِیْ کُلِّ اٰنٍ وَّلَحْظَۃٍ عَدَدَ کُلِّ ذَرَّۃٍ اَلْفَ اَلْفَ مَرَّۃٍ ط مِنْ عُبَیْدِکَ اَحْمَدَ رَضَا اِبْنِ نَقِیْ عَلِیْ یَسْئَالُکَ الشَّفَاعَۃَ فَاشْفَعْ لَہٗ وَلِلْمُسْلِمِیْنَ ؁

२१) फिर अपने दाहिने हाथ यानी मशरिक़ की तरफ़ हाथ भर हट कर हज़रते सिद्दीक़े अकबर रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के चेहरे-ए-नूरानी के सामने खड़े होकर अ़र्ज़ करो

اَلسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا خَلِیْفَۃَ رَسُوْلِ اللّٰہِ اَلسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا وَزِیْرَ رَسُوْلِ اللّٰہِ اَلسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا صَاحِبَ رَسُوْلِ اللّٰہِ فِی الْغَارِ وَرَحْمَۃُ اللّٰہِ وَبَرَکَاتُہٗ۔

२२) फिर इतना ही औंर हट कर हज़रते फ़ारुक़े अअ्ज़म रदियल्लाहु तआला अन्हु के रु-बरु-खड़े होकर अर्ज़ करो :- اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا اَمِيْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ ط اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مُتَمِّمَ الْاَرْبَعِيْنَ ط اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا عِزَّ الْاِسْلَامِ وَالْمُسْلِمِيْنَ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ ؕ

२३) फिर बालिश्त भर मग़रिब की तरफ़ पलटो और सिद्दीक़-ो फ़ारुक़ के दर्मियान खड़े होकर अर्ज़ करो :- اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمَا يَا خَلِيْفَتَيْ رَسُوْلِ اللّٰهِ ط اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمَا يَا وَزِيْرَيْ رَسُوْلِ اللّٰهِ ط اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمَا يَا ضَجِيْعَيْ رَسُوْلِ اللّٰهِ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ ط اَسْئَلُكُمَا الشَّفَاعَةَ عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلَيْكُمَا وَبَارَكَ وَسَلَّمَ ۔

२४) ये सब हाज़िरियाँ महल्ले इजाबत हैं। दुआ में कोशिश करो। दुआ-ए-जामेअ करो। दुरुद पर क़नाअत बेहतर।

२५) फिर मिंबरे अतहर के क़रीब दुआ मांगो।

२६) फिर रौज़-ए-जन्नत में (यानी जो जगह मिंबर व हुजर-ए मुनव्वरा के दर्मियान है इसे हदीस में जन्नत की क्यारी फ़रमाया) आकर दो रकअत नफ्ल गैर मकरु

मकरुह में पढ़कर दुआ़ करो।

२७) यूँ ही मस्जिद शरीफ़ के हर सुतून के पास नमाज़ पढ़ो, दुआँ मांगो कि महले बरकात हैं। ख़ुसूसन बअ़ज में ख़ास ख़ुसूसियत है।

२८) जब तक मदीना तय्येबा की हाज़िरी नसीब हो। एक साँस बेकार न जाने दो ज़रुरियात के सिवा अक्सर वक़्त मस्जिद शरीफ़ में बा तहारत हाज़िर रहो। नमाज़-ो तिलावत व दुरुद में वक़्त गुज़ारो दुनिया की बात किसी मस्जिद में नहीं करनी चाहिए, न यहाँ।

२९) हमेशा हर मस्जिद में जाते वक़्त एअ्तिकाफ़ की नियत करलो। यहाँ तुम्हारी याद दहानी ही को दरवाज़ा से बढ़ते ही ये कुतबा मिलेगा :- نَوَيْتُ سُنَّةَ الْاِعْتِكَافِ

३०) मदीना तय्येबा में रोज़ा नसीब हो। ख़ुसूसन गर्मी में तो क्या कहना कि इस पर वअ़्द-ए-शफ़ाअ़त है।

३१) यहाँ हर नेकी एक की पचास हज़ार लिखी जाती हैं लिहाज़ा इबादत में ज़ियादा कोशिश करो खाने पीने की कमी ज़रुर करो।

३२) क़ुरऑन मजीद का कम से कम एक ख़त्म यहाँ और हतीमे कअ़्बा मुअ़ज़्ज़मा में कर लो।

३३) रौज़-ए-अनवर पर नज़र भी इबादत है, जैसे कअ्बा मुअ़ज़्ज़मा या क़ुरऑन मजीद का देखना तो अदब के साथ इस की कसरत करो और दुरुद-ो सलाम अ़र्ज़ करो।

३४) पजंगाना या कम अज़ कम सुब्ह-ो शाम मवाजह शरीफ़ में अ़र्ज़ सलाम के लिए हाज़िर हो।

३५) शहर में ख़्वाह शहर से बाहर जहाँ कहीं गुबंदे मुबारक पर नज़र पड़े फ़ौरन दस्त बस्ता उधर मुहँ करके सलात-ो सलाम अ़र्ज़ करो। बग़ैर इस के हरगिज़ न गुज़रो कि ख़िलाफ़े अदब है।

३६) तर्के जमाअत बिला उज़्र हर जगह गुनाह है। और कई बार हो तो सख़्त हराम व गुनाहे कबीरा और यहाँ तो गुनाह के अलावा कैसी सख़्त महरुमी है। वलइयाज़ बिल्लाहि तआ़ला, सही हदीस में है। रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम फ़रमाते हैं जिसकी मेरी मस्जिद में (४०) नमाज़ें फ़ौत न हों उसके लिए दोज़ख़-ो निफ़ाक़ से आज़ादियाँ लिखी जाएँ।

३७) क़ब्रे करीम को हरगिज़ पीठ न करो और हत्तल इम्कान नमाज़ में भी ऐसी जगह खड़े हो कि पीठ करनी न पड़े।

३८) रौज़-ए-अक़्दस का न तवाफ़ करो न सज्दा न इतना झुकना कि रुकूअ के बराबर हो। रसूलुल्लाह तआ़ला

अ़लैहि वसल्लम की तअ़्ज़ीम उनकी इताअ़त में है।

३९) बक़ीअ़ व उहुद व क़बा की ज़ियारत सुन्नत है। मस्जिदे क़बा की दो रक्अ़त का सवाब एक उमरे के बराबर है। और चाहो तो यहीं हाज़िर रहो। सय्येदी इब्ने अबी जुमरा कुद्दससिर्रूहू जब हाज़िरे हुज़ूर होते तो आठों पहर बराबर हुज़ूरी में खड़े रहते। एक दिन बक़ीअ़ वग़ैरह की ज़ियारत का ख़याल आया। फिर फ़रमाया ये है अल्लाह का दरवाज़ा भीक मांगने वालों के लिए खुला हुआ इसे छोड़कर कहाँ जाऊँ।

"सर ईजा, सज्दा ईजा, बन्दगी ईजा, क़रार ईजा"

४०) वक़्ते रुख़्सत मवाजेह अनवर में हाज़िर हो और हुज़ूर से बार बार इस नेअ़्मत की अ़ता का सवाल करो और तमाम आदाब कि कअ़्बा मुअ़ज़्ज़मा से रुख़्सत में गुज़रे मलहूज़ रखो और सच्चे दिल से दुआ़ करो कि इलाही ईमान व सुन्नत पर मदीना तय्येबा में मरना और बक़ीअ़े पाक में दफ़्न होना नसीब हो :-

اَللّٰهُمَّ ارْزُقْنَا اٰمِيْنَ۔ اٰمِيْنَ۔ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ
وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّاٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ
وَابْنِهٖ وَحِزْبِهٖ اَجْمَعِيْنَ اٰمِيْنَ۔ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ
الْعَالَمِيْنَ ط

صلی اللہ علی النبی الامی
وآلہ صلی اللہ علیہ وسلم
صلاۃ وسلاما علیک
یا رسول اللہ

तवाफ़ व सई
और
सफ़ा व मरवा की दुआएं

मुल्तज़म की दुआ

اَللّٰهُمَّ هٰذَا الْبَيْتُ بَيْتُكَ وَالْحَرَمُ حَرَمُكَ وَالْاَمْنُ اَمْنُكَ وَهٰذَا مَقَامُ الْعَائِذِ بِكَ مِنَ النَّارِ فَاَجِرْنِىْ مِنَ النَّارِ اَللّٰهُمَّ قَنِّعْنِىْ بِمَا رَزَقْتَنِىْ وَبَارِكْ لِىْ فِيْهِ وَاخْلُفْ عَلٰى كُلِّ غَائِبَةٍ بِخَيْرٍ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ

तर्जमा :- ऐ अल्लाह ये घर तेरा घर है और हरम तेरा हरम है और तेरा ही अमन है और जहन्नम से तेरी पनाह मांगने वाले की ये जगह है तू मुझ को जहन्नम से पनाह दे ऐ अल्लाह जो तूने मुझ को दिया मुझे उस पर क़ानेअ कर दे, और मेरे लिए उसमें वरकत दे और हर ग़ायब पर ख़ैर के साथ तू ख़लीफ़ा होजा। अल्लाह के सिवा कोई मअ्बूद नहीं जो अकेला है उसका कोई शरीक नहीं उसी के लिए मुल्क है उसी के

लिए हम्द है और हर शय पर क़ादिर है।

रुक्ने इराक़ी की दुआ

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ
مِنَ الشَّكِّ وَالشِّرْكِ
وَالشِّقَاقِ وَالنِّفَاقِ
وَسُوْءِ الْاَخْلَاقِ وَسُوْءِ
الْمُنْقَلَبِ فِی الْمَالِ وَالْاَهْلِ
وَالْوَلَدِ ط

तर्जमा :- ऐ अल्लाह मैं तेरी पनाह मांगता हूँ। शक और शिर्क और इख़्तिलाफ़-ो निफ़ाक़ से और माल व अहल-ो अवलाद में वापस होकर बुरी बात देखने से।

मीज़ाबे रहमत की दुआ

اَللّٰهُمَّ اَظِلَّنِیْ
تَحْتَ ظِلِّ عَرْشِكَ يَوْمَ
لَا ظِلَّ اِلَّا ظِلُّكَ وَلَا بَاقِیَ
اِلَّا وَجْهُكَ وَاسْقِنِیْ
مِنْ حَوْضِ نَبِيِّكَ مُحَمَّدٍ
صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ
شُرْبَةً هَنِيْئَةً لَا اَظْمَاُ
بَعْدَهَا اَبَدًا ط

तर्जमा :- इलाही तू मुझको अपने अ़र्श के साए में रख जिस दिन तेरे साए के सिवा कोई साया नहीं और तेरी ज़ात के सिवा कोई बाक़ी नहीं और अपने नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के हौज़ से मुझे ख़ुशगवार पानी पिला कि उसके बाद कभी प्यास न लगे।

रुक्ने शामी की दुआ

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهُ حَجًّا مَّبْرُوْرًا وَّسَعْيًا مَّشْكُوْرًا وَّذَنْبًا مَّغْفُوْرًا وَّتِجَارَةً لَّنْ تَبُوْرَ يَا عَالِمَ مَا فِى الصُّدُوْرِ اَخْرِجْنِىْ مِنَ الظُّلُمَاتِ اِلَى النُّوْرِ

तर्जमा :- ऐ अल्लाह तू हज्ज को मबरुर कर और सई मश्कूर कर और गुनाह को बख़्श दे और इसको वो तिजारत कर दे जो हिलाक न हो। ऐ सीनों की बातें जानने वाले मुझ को तारीकियों से नूर की तरफ़ निकाल।

रुक्ने यमानी की दुआ

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْئَلُكَ الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ فِى الدِّيْنِ وَالدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ط

तर्जमा :- इलाही तहक़ीक में मांगता हूँ तुझ से मुआफ़ी और आफ़ियत बीच दीन और दुनिया और आख़िरत के। (मक़ामे मुस्तजाब में दुआए जामेअ पढ़ो।)

सफ़ा की दुआ

اَبْدَأُ بِمَا بَدَأَ اللّٰهُ بِهٖ اِنَّ الصَّفَا وَالْمَرْوَةَ مِنْ شَعَائِرِ اللّٰهِ فَمَنْ حَجَّ الْبَيْتَ اَوِ اعْتَمَرَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِ اَنْ يَّطَّوَّفَ بِهِمَا وَمَنْ تَطَوَّعَ خَيْرًا فَاِنَّ اللّٰهَ شَاكِرٌ عَلِيْمٌ

तर्जमा :- मैं उस से शुरु करता हूँ जिसको अल्लाह ने पहले ज़िक्र किया बेशक सफ़ा व मरवा अल्लाह की निशानियों से हैं जिसने हज्ज या उमरा किया उस पर उनके तवाफ़ में गुनाह नहीं और जो शख़्स नेक काम करे तो बेशक अल्लाह बदला देने वाला जानने वाला है।

दर्मियाने सई की दुआ

رَبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَتَجَاوَزْ عَمَّا تَعْلَمُ وَتَعْلَمُ مَا لَا نَعْلَمُ اِنَّكَ اَنْتَ الْاَعَزُّ الْاَكْرَمُ اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهُ حَجًّا مَّبْرُوْرًا وَّسَعْيًا مَّشْكُوْرًا وَّذَنْبًا مَّغْفُوْرًا اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِيْ وَلِوَالِدَيَّ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ

तर्जमा :- ऐ परवरदिगार बख़्श और रहम कर और दर गुज़र कर उस से जिसे तू जानता है। और तू उसे जानता है जिसे हम नहीं जानते। बेशक तू इज़्ज़त व करम वाला है ऐ अल्लाह तू इसे हज्जे मबरुर कर और सई मश्कूर कर

وَالْمُؤْمِنَاتِ يَا مُجِيْبَ
الدَّعْوَاتِ رَبَّنَا تَقَبَّلْ
مِنَّا إِنَّكَ أَنْتَ السَّمِيْعُ
الْعَلِيْمُ وَتُبْ عَلَيْنَا إِنَّكَ
أَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ
رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا
حَسَنَةً وَّفِي الْآخِرَةِ
حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ
النَّارِ ط

और गुनाह बख़्श, ऐ अल्लाह मुझ को और मेरे वालिदैन और जमीअ मोमिनीन व मोमिनात को बख़्श दे। ऐ दुआओं के क़ुबूल करने वाले ऐ रब हम से तू क़ुबूल कर वेशक तू सुनने वाला जानने वाला है और हमारी तौबा क़ुबूल कर ले बेशक तू तौबा क़ुबूल करने वाला मेहरबान है ऐ रब तू हम को दुनिया में भलाई दे और आख़िरत में भलाई दे और हम को अज़ाबे जहन्नम से वचा।

दोनों मील से गुज़र कर पढ़ने की दुआ

لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ
وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ
لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ
يُحْيِيْ وَيُمِيْتُ وَهُوَ
حَيٌّ لَّا يَمُوْتُ

तर्जमा :- अल्लाह के सिवा कोई मअ्बूद नही दर आँ हालां कि वो अकेला है उसका कोई शरीक नहीं उसी की बादशाहत है उसी के लिए

بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ط

हम्द है वो ज़िन्दगी और मौत देता है और वो ऐसा हय्यु है कि उसको कभी मौत नहीं उसी के क़ब्ज़े में सारी भलाई है और वो हर चीज़ पर क़ादिर है।

तवाफ़ की निय्यत की दुआ

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اُرِيْدُ طَوَافَ بَيْتِكَ الْحَرَامِ فَيَسِّرْهُ لِيْ وَتَقَبَّلْهُ مِنِّيْ سَبْعَةَ اَشْوَاطٍ طَوَافَ الْحَجِّ اَوِ الْعُمْرَةِ لِلّٰهِ تَعَالٰى عَزَّوَجَلَّ

तर्जमा :- ऐ अल्लाह बेशक मैं तेरे बुज़ुर्ग घर के तवाफ़ की निय्यत कर रहा हूँ पस इस को मेरे लिए आसान कर और मेरी तरफ़ से इस को क़ुबूल फ़रमा सात चक्कर तवाफ़े हज्ज का या उमरा का ख़ास अल्लाह तआ़ला के लिए जो इज़्ज़त-ो जलाल वाला है।

दुआ-ए-तवाफ़ बराए दौरे अव्वल

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ

तर्जमा :- अल्लाह पाक है और सारी तअ़रीफ़ें अल्लाह

اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِیِّ الْعَظِیْمِ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ الْعَفْوَ وَالْعَافِیَةَ وَالْمُعَافَاۃَ الدَّائِمَةَ فِی الدِّیْنِ وَالدُّنْیَا وَالْاٰخِرَۃِ وَالْفَوْزَ بِالْجَنَّةِ وَالنَّجَاۃَ مِنَ النَّارِ ط

के लिए हैं और कोई क़ूव्वत-ो ताक़त नहीं मगर अल्लाह बुलन्द-ो बुज़ुर्ग की मदद से और रहमते कामिला और सलाम नाज़िल हो अल्लाह के रसूल पर अल्लाह की रहमतें और सलाम है उन पर, ऐ अल्लाह मैं तुझ से सुवाल करता हूँ मुआफ़ी और आफ़ियत और दाइमी मुआफ़ी का दीन में और दुनिया व आख़िरत में और कामयाबी का जन्नत से और नजात का दोज़ख़ से।

या मुन्दर्जा ज़ेल दुआ पढ़े।

رَبَّنَا اٰتِنَا فِی الدُّنْیَا حَسَنَةً وَّفِی الْاٰخِرَۃِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ وَاَدْخِلْنَا الْجَنَّةَ مَعَ الْاَبْرَارِ یَا عَزِیْزُ یَا غَفَّارُ یَا رَبَّ الْعٰلَمِیْنَ ط

तर्जमा :- ऐ हमारे रब हमको दुनिया और आख़िरत में नेकी अता फ़रमा और अज़ाबे नार से बचा और हम को नेकों के साथ जन्नत में दाख़िल फ़रमा। ऐ ग़ालिब ऐ बख़्शिश फ़रमाने वाले, ऐ जहानों के पालने वाले।

दुआ-ए-तवाफ़ बराए दौरे दोयम

اللّٰهُمَّ إِنَّ هٰذَا
الْبَيْتَ بَيْتُكَ وَالْحَرَمَ
حَرَمُكَ وَالْأَمْنَ
أَمْنُكَ وَأَنَا عَبْدُكَ
وَابْنُ عَبْدِكَ وَهٰذَا
مَقَامُ الْعَائِذِ بِكَ
مِنَ النَّارِ فَحَرِّمْ
لُحُوْمَنَا وَبَشَرَتَنَا
عَلَى النَّارِ اللّٰهُمَّ حَبِّبْ
إِلَيْنَا الْإِيْمَانَ وَزَيِّنْهُ
فِيْ قُلُوْبِنَا وَكَرِّهْ
إِلَيْنَا الْكُفْرَ وَالْفُسُوْقَ
وَالْعِصْيَانَ وَاجْعَلْنَا
مِنَ الرَّاشِدِيْنَ اللّٰهُمَّ
قِنِيْ مِنْ عَذَابِكَ
يَوْمَ تَبْعَثُ عِبَادَكَ
اللّٰهُمَّ ارْزُقْنِي الْجَنَّةَ
بِغَيْرِ حِسَابٍ ط

तर्जमा :- ऐ अल्लाह बेशक ये घर तेरा घर है और हरम तेरा हरम है और अमन तेरा ही अमन है। और मैं तेरा ही बन्दा हूँ और तेरे बन्दे का बेटा हूँ। और ये मक़ाम तेरे साथ जहन्नम से पनाह मांगने वाले का है। हमारे गोश्त और हमारे जिस्म को जहन्नम पर हराम फ़रमा दे। ऐ अल्लाह ईमान को हमारा महबूब बनादे और उससे हमारे दिलों को मुज़य्यन कर दे और कुफ़्र और फ़िस्क़ और नाफ़रमानी को हमारे लिए ग़ैर पसन्दीदा बना और हम को हिदायत पाने वालों में से कर दे। ऐ अल्लाह मुझे अपने अज़ाब से बचा जिस दिन कि तू अपने बन्दों को मबऊस फ़रमाएगा। ऐ अल्लाह अता

कर मुझे जन्नत बिग़ैर हिसाब के।

दुआ़-ए-तवाफ़ बराए सोएम

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَعُوْذُ بِكَ مِنَ الشَّكِّ وَالنِّفَاقِ وَالشِّقَاقِ وَسُوْءِ الْمَنْظَرِ وَالْمُنْقَلَبِ فِى الْمَالِ وَالْاَهْلِ وَالْوَلَدِ اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْئَلُكَ رِضَاكَ وَالْجَنَّةَ وَاَعُوْذُ بِكَ مِنْ سَخَطِكَ وَالنَّارِ اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْفَقْرِ وَاَعُوْذُ بِكَ مِنْ فِتْنَةِ الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ۔

तर्जमा :- ऐ अल्लाह मैं तुझ से पनाह मांगता हूँ शक और निफ़ाक़ और शिक़ाक़ से और वापसी की बदहाली और माल या अहल या अवलाद में कोई बुरी हालत नज़र आने से। ऐ अल्लाह मैं तुझ से तेरी रिज़ा मांगता हूँ और जन्नत और पनाह मांगता हूँ तेरे ग़ज़ब और जहन्नम से। ऐ अल्लाह मैं तुझ से पनाह मांगता हूँ फ़क्र से और पनाह मांगता हूँ ज़िन्दगी और मौत के फ़ितना से।

दुआ़-ए-तवाफ़ बराए दौरे चहारुम

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهُ حَجًّا مَّبْرُوْرًا وَّسَعْيًا مَّشْكُوْرًا وَّذَنْبًا

तर्जमा :- ऐ अल्लाह इस हज्ज को हज्जे मबरूर कर और सई मशकूर कर और गुनाह

مَغْفُوْرًا وَّعَمَلًا
صَالِحًا مَّقْبُوْلًا وَّتِجَارَةً
لَّنْ تَبُوْرَ يَا عَالِمَ
مَا فِي الصُّدُوْرِ اَخْرِجْنِيْ
يَا اَللّٰهُ مِنَ الظُّلُمَاتِ
اِلَى النُّوْرِ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ
اَسْئَلُكَ مُوْجِبَاتِ
رَحْمَتِكَ وَعَزَائِمَ
مَغْفِرَتِكَ وَالسَّلَامَةَ
مِنْ كُلِّ اِثْمٍ وَّالْغَنِيْمَةَ
مِنْ كُلِّ بِرٍّ وَّالْفَوْزَ بِالْجَنَّةِ
وَالنَّجَاةَ مِنَ النَّارِ
رَبِّ قَنِّعْنِيْ بِمَا رَزَقْتَنِيْ
وَبَارِكْ لِيْ فِيْمَا اَعْطَيْتَنِيْ
وَاخْلُفْ عَلٰى كُلِّ
غَائِبَةٍ لِّيْ مِنْكَ
بِخَيْرٍ۔

को मग़फ़ूर कर और अ़मले सालेह को मक़बूल क़र और ऐसी तिजारत कि कभी नुक़्सान न लाए। ऐ सीनों के भेदों को जानने वाले मुझे अंधेरों से नूर की तरफ़ निकाल। ऐ अल्लाह मैं तुझ से सुवाल करता हूँ, उन चीज़ों का जो तेरी रह़मत की मुस्तह़िक बनाने वाली हैं और तेरी मग़फ़िरत के पुख़्ता वअ़्दों का और हर गुनाह से सलामती का और हर नेकी से ग़नीमत का और कामयाबी का जन्नत के ज़रिअ़े और दोज़ख़ से नजात का ऐ रब मुझे क़ानेअ़ बना उन चीज़ों पर जो तूने मुझे दीं और बरकत दे मुझे उन में जो मुझे अ़ता कीं और ख़लीफ़ा हो जा अपनी तरफ़ से ख़ैर के साथ उन पर जो मुझ से ग़ाएब हैं।

दुआ-ए-तवाफ़ बराए दौरे पजुंम

اَللّٰهُمَّ اَظِلَّنِیْ
تَحْتَ ظِلِّ عَرْشِكَ
يَوْمَ لَا ظِلَّ اِلَّا ظِلُّ
عَرْشِكَ وَلَا بَاقِیَ
اِلَّا وَجْهُكَ وَاسْقِنِیْ
مِنْ حَوْضِ نَبِيِّكَ مُحَمَّدٍ
صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَ
سَلَّمَ شَرْبَةً هَنِيْئَةً
مَرِيْئَةً لَا اَظْمَاُ
بَعْدَهَا اَبَدًا، اَللّٰهُمَّ
اِنِّیْ اَسْئَلُكَ مِنْ خَيْرِ
مَا سَاَلَكَ مِنْهُ نَبِيُّكَ
مُحَمَّدٌ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ
وَسَلَّمَ وَاَعُوْذُبِكَ
مِنْ شَرِّ مَا اسْتَعَاذَكَ
مِنْهُ نَبِيُّكَ مُحَمَّدٌ صَلَّى
اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ
اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ
الْجَنَّةَ وَنَعِيْمَهَا
وَمَا يُقَرِّبُنِیْ اِلَيْهَا
مِنْ قَوْلٍ اَوْ فِعْلٍ

तर्जमा :- ऐ अल्लाह मुझे अपने अर्श के साए में जगह दे। जिस दिन तेरे अर्श के साए के कोई साया न होगा और तेरी ज़ाते करीम के सिवा कोई बाक़ी न रहेगा। और मुझे अपने नबी मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के हौज़ से सैराब फ़रमा ऐसा शरबत जो रचता पचता कि उसके बाद मैं कभी प्यासा न रहूँ ऐ अल्लाह मैं तुझ से सवाल करता हूँ उस भलाई का जिसका सुवाल तेरे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने तुझ से किया और पनाह मांगता हूँ तुझ से हर उस बुराई से जिस से तेरे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तुझसे पनाह मांगी।

أَوْ عَمَلٍ وَأَعُوْذُ بِكَ مِنَ النَّارِ وَمَا يُقَرِّبُنِيْ إِلَيْهَا مِنْ قَوْلٍ أَوْ فِعْلٍ أَوْ عَمَلٍ

ऐ अल्लाह मैं तुझ से जन्नत की नेअ़मतों का सुवाल करता हूँ और क़रीब कि मुझे जन्नत की तरफ़ क़ौल, फ़ेअ़्ल-ो अ़मल से।

दुआ़-ए-तवाफ़ बराए दौरे शशुम

اَللّٰهُمَّ إِنَّ لَكَ عَلَيَّ حُقُوْقًا كَثِيْرَةً فِيْمَا بَيْنِيْ وَبَيْنَكَ وَحُقُوْقًا كَثِيْرَةً فِيْمَا بَيْنِيْ وَبَيْنَ خَلْقِكَ اَللّٰهُمَّ مَا كَانَ لَكَ مِنْهَا فَاغْفِرْهُ لِيْ وَمَا كَانَ لِخَلْقِكَ فَتَحَمَّلْهُ عَنِّيْ وَأَغْنِنِيْ بِحَلَالِكَ عَنْ حَرَامِكَ وَبِطَاعَتِكَ عَنْ مَعْصِيَتِكَ وَبِفَضْلِكَ عَمَّنْ سِوَاكَ يَا وَاسِعَ الْمَغْفِرَةِ اَللّٰهُمَّ إِنَّ بَيْتَكَ عَظِيْمٌ وَّوَجْهَكَ كَرِيْمٌ

तर्जमा :- ऐ अल्लाह बेशक मुझ पे तेरे बहुत से हुक़ूक़ हैं और मेरे और तेरी मख़्लूक़ के दर्मियान बहुत से हुक़ूक़ हैं। ऐ अल्लाह उन में से जो हुक़ूक़ कि तेरे हैं उनको मुआफ़ फ़रमा और जो तेरी मख़्लूक़ के हुक़ूक़ हैं। उन को मुझ से उठा दे, और मुझे अपने हलाल के ज़रिअे हराम से बे परवाह कर दे। और अपनी ताअ़त के ज़रिअे मुसीबत से और अपने फ़ज़्ल के ज़रिअे अपने मासिवा से ऐ वसीअ़ मग़फ़िरत वाले ऐ अल्लाह बेशक तेरा घर अ़ज़ीम है और तेरी ज़ात

हलीम-ो करीम और बुज़ुर्ग है मुआफ़ी को पसंद फ़रमाता है बस मुझे मुआफ़ फ़रमा।

وَّاَنْتَ يَا اللّٰهُ حَلِيْمٌ كَرِيْمٌ
عَظِيْمٌ تُحِبُّ الْعَفْوَ
فَاعْفُ عَنِّيْ

दुआ-ए-तवाफ़ बराए दौरे हफ़्तुम

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ
اَسْئَلُكَ اِيْمَانًا كَامِلًا
وَّيَقِيْنًا صَادِقًا
وَّرِزْقًا وَّاسِعًا وَّقَلْبًا
خَاشِعًا وَّلِسَانًا ذَاكِرًا
وَّرِزْقًا حَلَالًا طَيِّبًا وَّتَوْبَةً
نَصُوْحًا وَّتَوْبَةً قَبْلَ
الْمَوْتِ وَرَاحَةً عِنْدَ الْمَوْتِ
وَمَغْفِرَةً وَّرَحْمَةً
بَعْدَ الْمَوْتِ وَعَفْوًا
عِنْدَ الْحِسَابِ وَالْفَوْزَ
بِالْجَنَّةِ وَالنَّجَاةَ
مِنَ النَّارِ بِرَحْمَتِكَ يَا عَزِيْزُ
يَا غَفَّارُ رَبِّ زِدْنِيْ عِلْمًا
وَّاَلْحِقْنِيْ بِالصَّالِحِيْنَ ۔

तर्जमा :- ऐ अल्लाह मैं तुझसे मांगता हूँ ईमाने कामिल, यक़ीने सादिक़ और रिज़्क़ कुशादा और डरने वाला दिल और ज़िक्र करने वाली ज़बान और हलाल तय्येब और ख़ालिस तौबा और मौत से पहले तौबा और मौत के वक़्त राहत और मग़फ़िरत-ो रहमत बादे मौत, और मुआफ़ी वक़्ते हिसाब और कामयाबी जन्नत के साथ और निजात दोज़ख़ से तेरी रहमत के साथ ऐ ग़ालिब, और ऐ बख़्शने वाले। ऐ मेरे रब मेरा इल्म ज़्यादा कर और मुझे नेकों में शामिल फ़रमा।

सलाम ब बारगाहे ख़ैरुल अनाम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम

अज़ :- अअ्ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान फ़ाज़िले बरेलवी रदियल्लाहु तआला अन्हु

मुस्तफ़ा जाने रहमत पे लाखों सलाम
शम्अे बज़्मे हिदायत पे लाखों सलाम

मुहरे चर्ख़े नुबूव्वत पे रौशन दुरुद
गुले बाग़े रिसालत पे लाखों सलाम

शहरे यारे इरम ताजदारे हरम
नव बहारे शफ़ाअ्त पे लाखों सलाम

शबे असरा के दूल्हा पे दाएम दुरुद
नौश-ए-बज़्मे जन्नत पे लाखों सलाम

ख़ल्क़ के दाद रस सब के फ़रियाद रस
कहफ़े रोज़े मुसीबत पे लाखों सलाम

हम ग़रीबों के आक़ा पर बेहद दुरुद
हम फ़क़ीरों की सरवत पे लाखों सलाम

जिसके आगे सरे सरवराँ ख़म रहें
उस सरे ताजे रिफ़अ्त पे लाखों सलाम

जिसके माथे शफ़ाअ्त का सेहरा रहा
उस जबीने सआदत पे लाखों सलाम

जिसके सज्दे को महराबे कअ्बा झुकी
उन भवों की लताफ़त पे लाखों सलाम
जिस तरफ़ उठ गई दम में दम आ गया
उस निगाहे अ़ेनायत पे लाखों सलाम
जिस से तारीक दिल जगमगाने लगे
उस चमक वाली रंगत पे लाखों सलाम
वो दहन जिस की हर बात वहिए ख़ुदा
चश्म-ए-इल्म-ो हिकमत पे लाखों सलाम
वो ज़बाँ जिस को सब कुन की कुंजी कहें
उसकी नाफ़िज़ हुकूमत पे लाखों सलाम
जिनकी तसकीं से रोते हुए हँस पड़े
उस तबस्सुम की आ़दत पे लाखों सलाम
जिसको बारे दुआ़लम की परवाह नहीं
ऐसे बाज़ू की क़ूव्वत पे लाखों सलाम
कुल जहाँ मिल्क और जौ की रोटी ग़िज़ा
उस शिकम की क़नाअ़त पे लाखों सलाम
पहले सज्दा पे रोज़े अज़ल से दुरुद
यादगारी-ए-उम्मत पे लाखों सलाम
सय्येदा ज़ाहिरा तय्येबा ताहिरा
जाने अहमद की राहत पे लाखों सलाम
अह्ले इस्लाम की मादराने शफ़ीक़
बानुवाने तहारत पे लाखों सलाम
बिन्ते सिद्दीक़ आरामे जाने नबी
उस हरीमे बराअत पे लाखों सलाम

साय - ए - मुस्तफ़ा माय - ए - इस्तफ़ा
इज़्ज़-ो नाज़े ख़िलाफ़त पे लाखों सलाम

यानी उस अफ़ज़लुल ख़ल्क़ बादुर्रुसुल
सानियसनैने हिजरत पे लाखों सलाम

अस्दक़ुस्सादक़ीं सय्येदुल मुत्तक़ीं
चश्म-ो गोशे विज़ारत पे लाखों सलाम

वो उमर जिस के अअ्दा पे शैदा सक़र
उस ख़ुदा दोस्त हज़रत पे लाखों सलाम

तर्जमाने नबी हम ज़बाने नबी
जाने शाने अदालत पे लाखों सलाम

ज़ाहिदे मस्जिदे अहमदी पे दुरुद
दौलते जैशे इश्रत पे लाखों सलाम

यानी उस्मान साहिब क़मीसे हुदा
हुल्ला पोशे शहादत पे लाखों सलाम

मुर्तज़ा शेरे हक़ अश्जउल अश्जईन
साक़ी-ए-शीर-ो शरबत पे लाखों सलाम

शेरे शमशीरे ज़न शाहे ख़ैबर शिकन
पर्तवे दस्ते क़ुदरत पे लाखों सलाम

शाफ़ई, मालिक, अहमद इमामे हनीफ़
चार बाग़े इमामत पे लाखों सलाम

ग़ौसे अअ्ज़म इमामुत्तुक़ा वन्नुक़ा
जलव-ए-शाने क़ुदरत पे लाखों सलाम

जिसकी मिंबर हुई गरदने औलिया
उस क़दम की करामत पे लाखों सलाम

एक मेरा ही रह्मत पे दअ्‌वा नहीं
शाह की सारी उम्मत पे लाखों सलाम
काश महशर में जब उनकी आमद हो और
भेजें सब उनकी शौकत पे लाखों सलाम
मुझ से ख़िदमत के क़ुदसी कहें हाँ रज़ा
मुस्तफ़ा जाने रह्मत पे लाखों सलाम

ग़ज़ल कि दरबार-ए-अज़्मे सफ़रे अतहर मदीना मुनव्वरा अज़ मक्का मुअज़्ज़मा

अज़ :- अअ्‌ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान फ़ाज़िले बरेलवी रदियल्लाहु तआला अन्हु

हाजियो आओ शहंशाह का रौज़ा देखो
कअ्‌वा तो देख चुके कअ्‌बा का कअ्‌बा देखो
रुक्ने शामी से मिटी वहशते शामे ग़ुर्बत
अब मदीना को चलो सुब्हे दिल आरा देखो
आबे ज़मज़म तो पिया ख़ूब बुझाईं प्यासें
आओ जूदे शहे कौसर का भी दरिया देखो
ज़ेरे मीज़ाब मिले ख़ूब करम के छींटे
अब्रे रह्मत का यहाँ ज़ोरे बरसना देखो

धूम देखी है दरे कअ़्बा पे बेताबों की
उनके मुश्ताक़ों में हसरत का तड़पना देखो
मिस्ले परवाना फिरा करते थे जिस शम्मअ़् के गिर्द
अपनी उस शम्मअ़् को परवाना यहाँ का देखो
ख़ूब आँखों से लगाया है ग़िलाफ़े कअ़्बा
क़स्रे महबूब के पर्दे का भी जलवा देखो
वाँ मुतीओं का जिगर ख़ौफ़ से पानी पाया
याँ सियह कारों का दामन पे मचलना देखो
अव्वलीं ख़ान-ए-हक़ की तो ज़ियाएं देखीं
आख़री बैते नबी का भी तजल्ला देखो
ज़ीनते कअ़्बा में था लाख उरुसों का वनाव
जलवा फ़रमा यहाँ कौनेन का दूल्हा देखो
धो चुका ज़ुल्मते दिल बोस-ए-संगे असवद
ख़ाक बोसी-ए-मदीना का भी रुतवा देखो
बेनियाज़ी से वहाँ काँपती पाई ताअ़त
जोशे रहमत पे यहाँ नाज़ गुनह का देखो
जुमअ़े मक्का था ईद अहले अ़ेवादत के लिए
मुजरिमो आओ यहाँ ईदे दोशंवा देखो
ख़ूब मसआ में व-उम्मीदे सफ़ा दौड़लिए
रहे जानाँ की सफ़ा का भी तमाशा देखो
रक़्से विस्मिल की वहारें तो मिना में देखीं
दिले ख़ूँ नावा फ़शाँ का भी तड़पना देखो
ग़ौर से सुन तो रज़ा कअ़्वा से आती है सदा
मेरी आँखों से मेरे प्यारे का रौज़ा देखो

"काश गुंबदे ख़िज़्रा देखने को मिल जाता"

अज़ :- जानशीने हुज़ूर मुफ्ति-ए-अअ़ज़म मुफ्ती मुहम्मद अख़्तर रज़ा ख़ान अज़हरी

दाग़े फ़ुरक़ते तयबा क़ल्बे मुज़महिल जाता
काश गुंबदे ख़िज़्रा देखने को मिल जाता
मेरा दम निकल जाता उनके आस्ताने पर
उनके आस्ताने की ख़ाक में मैं मिल जाता
मेरे दिल से धुल जाता दाग़े फ़ुरक़ते तयबा
तयबा में फ़ना होकर तयबा में ही मिल जाता
मौत लेके आ जाती ज़िन्दगी मदीने में
मौत से गले मिलकर ज़िन्दगी में मिल जाता
ख़ुल्दे ज़ारे तयबा का इस तरह सफ़र होता
पीछे पीछे सर जाता आगे आगे दिल जाता
दिल पे जब किरन पड़ती उन के सब्ज़ गुंबद की
उस की सब्ज़ रंगत से बाग़ बन के खिल जाता
फ़ुरक़ते मदीना ने वो दिए मुझे सदमे
कोह पर अगर पड़ते कोह भी तो हिल जाता
दिल मेरा बिछा होता उनकी रहगुज़ारों में
उन के नक़्शे पा से यूँ मिल के मुस्तक़िल जाता
दिल पे वो क़दम रखते नक़्शे पा ये दिल बनता
या तो ख़ाके पा बनकर पा से मुत्तसिल जाता

वो ख़िराम फ़रमाते मेरे दी-दओ दिल पर
दीदा मैं फ़िदा करता सदक़े मेरा दिल जाता
चश्में तर वहाँ बहती दिल का मुद्दआ कहती
आह! बा अदब रहती मूँह मेरा सिल जाता
दर पे दिल झुका होता, इज़्न पा के फिर बढ़ता
हर गुनाह याद आता दिल ख़जिल-ख़जिल जाता
मेरे दिल में बस जाता जलवा ज़ार तयबा का
दाग़े फ़ुरक़ते तयबा फूल बन के खिल जाता
उनके दर पे अख़्तर की हसरतें हुई पूरी
साईले दरे अक़्दस कैसे मुन्फ़इल जाता

"उनके दर की भीक अच्छी सरवरी अच्छी नहीं"

अज़ :- जानशीने हुज़ूर मुफ्ति-ए-अअ़जम मुफ्ती मुहम्मद अख़्तर रज़ा ख़ान अज़हरी

बुल हवस सुन सीम-ो ज़र की बन्दगी अच्छी नहीं
उनके दर की भीक अच्छी सरवरी अच्छी नहीं
सरवरी क्या चीज़ है उनकी गदाई के हुज़ूर
उनके दर की भीक अच्छी सरवरी अच्छी नहीं
उनका चौखट चूमकर ख़ुद कह रही है सरवरी
उनके दर की भीक अच्छी सरवरी अच्छी नहीं

सरवरी ख़ुद है भिकारन बन्दगाने शाह की
उनके दर की भीक अच्छी सरवरी अच्छी नहीं
सरवरी पाकर भी कहते हैं गदायाने हुज़ूर
उनके दर की भीक अच्छी सरवरी अच्छी नहीं
ताजे ख़ुद रा कासा करदा गोयद ईजा ताजवर
उनके दर की भीक अच्छी सरवरी अच्छी नहीं
ताज को कासा बनाकर ताजवर कहते हैं यूँ
उनके दर की भीक अच्छी सरवरी अच्छी नहीं
मुफ़्ति-ए-अअ्जम यके अज़ मर्दुमाने मुस्तफ़ा
इस रज़ाए मुस्तफ़ा से दुश्मनी अच्छी नहीं
हुज्जतुल इस्लाम ऐ हामिद रज़ा बाबा-ए-मन
तुम को बिन देखे हमारी ज़िन्दगी अच्छी नहीं
ख़ाके तयबा की तलब में ख़ाक हो ये ज़िन्दगी
ख़ाके तयबा अच्छी अपनी ज़िन्दगी अच्छी नहीं
आरज़ू मन्दाने गुल कांटो से बचते हैं कहीं
ख़ारे तयबा से तेरी पहलू तही अच्छी नहीं
दश्ते तयबा के फ़िदाई से जिनां का तज़किरा
जो रुला दे ख़ून ऐसी दिल्लगी अच्छी नहीं
दश्ते तयबा छोड़कर मैं सैरे जन्नत को चलूँ
रहने दीजे शेख़ जी दीवानगी अच्छी नहीं
जो जुनूने ख़ुल्द में कव्वों को दे बैठे धरम
ऐसे अन्धे शेख़ जी की पैरवी अच्छी नहीं
अक़्ल चोपायों को दे बैठे हकीमे थानवी
मैं न कहता था कि सोहबत देव की अच्छी नहीं

यादे जानाँ में मआज़ल्लाह हस्ती की ख़बर
यादे जानाँ में किसी से आगही अच्छी नहीं
शामे हिजराँ में हमें है जुस्तुजू उस मेह्र की
चौधवीं के चाँद तेरी चाँदनी अच्छी नहीं
तौक़े तहज़ीबे फ़रंगी तोड़ डालो मोमिनो
तीरगी अंजाम है ये रौशनी अच्छी नहीं
शाख़े गुल पर ही बनाएंगे अ़नादिल आशियाँ
बर्क़ से कह दो कि हम से ज़िद तेरी अच्छी नहीं
जो पिया को भाए अख़्तर वो सुहाना राग है
जिससे नाख़ुश हो पिया वो रागनी अच्छी नहीं